हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जुलाई, 2005 वर्ष 4 अंक 5

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

जो शख़्स आख़िरत में जहन्नम की आग से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया वही काम्याब है।
(पवित्र क़ुर्आन 3 : 185)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है।
कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

• स्कूल खुल गये	सम्पादकीय	3
• कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
• हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	11
• मायूस मत हो ऐ दिल (पद्य)	ख़ैरुन्निसा बेहतर	14
• हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अख़्लाक़	अल्लामा शिब्ली नोमानी	15
• अध्यापकों का चयन	डा० मु० इज्तिबा नदवी	18
• विश्वास के विभिन्न तरीके	एम०एस० बहराइची	20
• नई चुनौतियां	मुहम्मद हसन अंसारी	21
• सभ्यता की अश्लीलता	डा० मसऊद आलम क़ासिमी	22
• शैतान जिन्न से बचने की तदबीरें	अबू मग़्रूब	25
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	26
• उम्मुल मोमिनीन हजरत जुवैरिया	सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी	27
• एक धमाका ख़ेज नाविल	मु० मेराज खां	28
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवई	30
• कुदरत का बेहतरीन तोहफा आम	इदारा	32
• नींद नव्वे मिनट के दो चरणों में आती है	हबीबुल्लाह आज़मी	33
• अमरीका का भ्रम	इदारा	33
• आह ! मुहीयुस्सुन्ना	हजरत मौलाना राबे हसनी	34
• ईमान जिन्दाबाद (पद्य)	काविश रूदौलवी	35
• रसूल (स०) की सच्ची पैरवी	मौ० अब्दुल माजिद दरयाबाद्दी	36
• फूलों का राजा गुलाब के कुछ गुण	डा० स०मु० आरिफ़ीन	37
• कोल सभ्यता	इदारा	38
• नअ़त व मन्कबत	हैदर अली नदवी	39
• रहीम के दोहे		39
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी	40

□□□

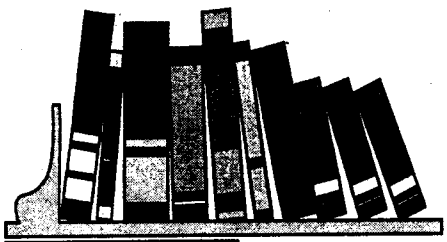

स्कूल खुल गये

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

जुलाई का महीना है स्कूल खुल चुके हैं, बुक स्टालों और स्टेशनरी की दुकानों पर तिल धरने की जगह नहीं, मैं ने भी इस लाइन की मालूमात हासिल की हैं जो पेशे ख़िदमत है।

एक अज़ीज़ का बच्चा नीली पैन्ट, सफ़ेद शर्ट, काले मोज़े, काले जूतों में मल्बूस घर से निकला गले में नेक्टाई भी थी और बालों में मांग भी। साफ़ सुथरा, गोरा चिट्टा, सिहतमन्द, तेज़ तर्रार कोई सात साल का बच्चा बड़ा ही प्यारा लग रहा था मगर यह क्या ! किताबों से भरा ख़ूबसूरत बैग उसकी पीठ पर मैं ने बच्चे की इजाज़त से हाथ में लेकर अन्दाज़ा लगाया कोई सात किलो वज़न रहा होगा। मैं बच्चे के घर मेहमान था। बच्चे ने कहा अंकल बैग दीजिए बस का टाइम हो रहा है। मैंने बैग दे दिया उसने पीठ पर लादा दोनों हाथ बैग में लगे फ़ीतों में डालकर फ़ीते शानों पर पहुंचा दिये ज़रा सा आगे को झुका और तेज़ी से स्कूल बस स्टाप की तरफ़ चल दिया। मैंने सोचा मेरी वापसी तो कल है आज मैं इस बच्चे से इन्टरव्यू ज़रूर लूंगा।

७ बजे का गया हुआ बच्चा १ बजे वापस आया, खाना खाया थोड़ा आराम किया फिर उठ कर इधर उधर टहलने लगा इतने में उसके टयूटर साहिब आ गये वह पूरे एक घन्टे तक बच्चे से ख़ाली जगहें भरने और रीडिंग की मश्क़ का काम लेते रहे फिर वह तशरीफ ले गये।

मग़रिब बाद मैंने बच्चे से पूछा बेटे क्या पढ़ते हो? तेज़ तर्रार बच्चे ने पूछा अंकल बैग लाऊं? मैंने कहा ज़रूर लाओ। दो मिनट में वह बैग लेकर आ गया और बैग से सब कुछ बाहर करके तआरूफ़ कराने लगा :

यह देखिये यह "गुल मोहर" फ़ार इंग्लिश रीडिंग है और यह "गुलमोहर" फ़ार प्रैक्टिस, यह "नालेज फ़ार यू" है, यह लिविंग साइन्स है, यह सिस्टेमेटिक मैथमेटिक्स है, यह फ़न विध ग्रामर है, यह स्टडीज इन इस्लाम है यह आर्ट बुक है, और अंकल हम उर्दू, हिन्दी भी पढ़ते हैं। यह देखिये "ज्ञान गंगा" फ़ार रीडिंग और यह ज्ञान गंगा फ़ार प्रेक्टिस और यह उर्दू फ़ार रीडिंग और यह फ़ार राइटिंग, अंकल मैं पारा भी पढ़ता हूं यह मेरा सयक़ूल का पारा है पहला पारा तो फर्स्ट में पढ़ चुका हूं और यह देखिये इक्सर साइज़ बुक्स हैं जो काउन्ट में टवेन्टी हैं और सब बाइन्ड की हुई हैं। मैं बच्चे की जसारत (साहस) और तेज़ी से भौचक्का रह गया। मैंने कहा बेटे ज़रा पारा सुनाओ फ़ौरन पढ़ना शुरू किया मगर एक आयत भी सहीह न पढ़ सका जिस का उसे ख़ुद एहसास हुआ और उसने सफ़ाई पेश की कि क़ारी साहब एक बार पढ़ा कर कहते हैं याद कर लाना यहां टयूटर वाले सर भी पारा नहीं याद करवाते। फिर दूसरा काम देखा, बहुत साफ़ और बहुत सहीह। मैंने पूछा बेटे यह वर्ड यहां क्यों लिखा? बोला देखिये अंकल मेरी मेम और मेरे सर जो लिखवाते हैं वही लिखता हूं अपनी तरफ़ से लिखूंगा तो ग़लती हो जाएगी। देखिय मुझ को दो कहानियां याद करवाई गई हैं मैं अभी सुना सकता हूं।

मैंने पूछा यह किस क्लास की बुक्स हैं? सर मैं सिकन्ड में हूं मेरा ऐडमिशन प्री नर्सरी में हुआ था, फिर नरसरी फिर केजी फिर फर्स्ट और अब सिकन्ड में हूं मेरा स्कूल बहुत अच्छा है। मैंने बच्चे

को शाबाशी देकर रूख़सत किया और सोच में पड़ गया बेशक नार्थ के यह इंग्लिश मीडियम स्कूल्स हिन्दोस्तानी बच्चों को रहन सहन का अच्छा तरीक़ा सिखा देते हैं। सफ़ाई सुथराई की तबीअ़त बना देते हैं, चौकसी और तेज़ी भी पैदा कर देते हैं लेकिन इंग्लिश लिखना बोलना भारी ख़र्च और लम्बे वक़्त के बाद ही सिखा पाते हैं।

एक दिन मैंने दीहात के एक प्राइमरी स्कूल का दूर से मुआइना किया लगभग ५० बच्चे कई टोलियों में एक पेड़ की छाया में ज़मीन पर बैठे अपने अपने काम में मश्गूल थे। एक टोली को एक बच्चा इम्ला बोल रहा था। "गुरू का आदर अत्यावश्यक है।" दूसरी टोली से एक बच्चे की आवाज आ रही थी : "पन्द्रह हज़ार चार सौ पांच को सत्तर नो उन्नासी से भाग दो।" एक उस्ताद ने डांटा अबे सत्तर नौ क्यों बताता है? बच्चे ने दोहराया "उन्नासी से भाग दो।" कुछ बच्चे सबक़ याद कर रहे थे तो कुछ बच्चे सब कुछ भूल कर खेल में लीन थे। गुरू जन, जो पांच थे पीपल के पेड़ के नीचे कुर्सी डाले अपने अपने घरों की समस्याओं का बखान कर रहे थे। कोई खैनी पीट कर मुंह में रख रहा था, तो कोई सिग्रेट पी रहा था तो कोई बीड़ी के कश लगा रहा था और दो मुझे ताक रहे थे। उनमें से एक ने मुझे आवाज दी "आऊ मोल्बी साहब आऊ," दूसरे ने एक बच्चे को आवाज दी, हे राम स्वरूप ! एक कुर्सी ला !", कुर्सी आ गई मैं कुर्सी पर बैठ गया। मैंने कहा "छमा कीजिए गा मुझे बीड़ी सिग्रेट के धुंए से कष्ट होता है।" दोनों ने बड़ी शराफ़त का इज़हार किया बीड़ी सिग्रेट दोनों फेंक दी गईं। अब खैनी वाले पंडित जी बोले इसी लिए मैं खैनी खाता हूं और किसी को कष्ट नही पहुंचाता। मैंने कहा, "पंडित जी आप अपने को तो कष्ट पहुंचाते हैं।" जवाब मिला "नहीं मोलवी साहब बड़ा आनन्द मिलता है।" मैंने कहा "क्या तम्बाकू के विषय पर आप ने कुछ नहीं पढ़ा?" जवाब मिला "पढ़ा है, इसमें नकोटिन विष है परन्तु अब तो पचास के पेटे में हूं अब यह आ़दत छूटना कठिन है।" मैंने कहा क्या आप ने सोचा है कि आप की इस आ़दत का प्रभाव आप के शिष्यों और आप के घर के बच्चों पर भी पड़ सकता है? क्यों नही संगत ही गुण होत हैं संगत ही गुन जाएं। बांस फांस और मीत्री एकै भाव बिकाएं। परन्तु मोलवी साहिब हम लोग ऐसे नहीं हैं कि जो पढ़ें उस पर तुरन्त चलने लगें। अगर आप महीने में एक बार एक घन्टा उपदेश के लिए समय निकाल लें तो हमारे विद्यार्थियों और गुरूजनों सब को बड़ा लाभ पहुंचे। मैंने कहा "अच्छा सोचूंगा" और इजाज़त लेकर चला आया। रास्ते में मुझे मालौना सलमान हुसैनी साहब की याद आई जिन्होंने स्कूल और कालिजेज़ के मुस्लिम तलबा पर काम की मुहिम चला रखी है। यहां तो पूरे की पेशकश हो गयी।

दूसरे दिन मैंने एक दूसरे गांव के प्राइमरी स्कूल का रूख़ किया जहां मेरा एक भांजा टीचर है। मैंने अस्सी बच्चे गिने उस्ताद सिर्फ़ एक । मालूम हुआ दो उस्ताद थे एक ने कोशिश कर के अपना प्रमोशन करवा लिया। मैंने पूछा, तुम इतने बच्चों को कैसे पढ़ाते हो? कहने लगे "मां मां मैं पढ़ाता कहां हूं मैंने कह रखा है कि जिस को जो पूछना हो मुझ से पूछ सकता है।" मैंने कहा "जब पढ़ाई नहीं होती तो इतनी तादाद क्यों है?" कहने लगे "मां मां खाने का वक़्त क़रीब है अभी एक घन्टा पहले पचीस तीस थे। देखिये किसी के झोले में एक किताब है, किसी के पास एक कापी है और किसी के पास कुछ भी नहीं है मगर रजिस्टर में नाम सब का लिखा हुआ है।"

मैंने कक्षा १ के एक बच्चे का बस्ता देखा उस के झोले में हिन्दी की पोथी, पहाड़े की किताब दो कापियां और एक पेंसिल रबर के साथ थी। एक कापी के कई सफ़हात (पृष्ठों) पर गिन्तियां लिखी गईं थीं। मेरे कहने पर उसने दीहाती लहजे में १०० तक गिनती सुनाई। दूसरी कापी पर दो अक्षरों वाले शब्दों के लिखने की मश्क़ की गयी थी। मेरे कहने पर बच्चे ने फर–फर सुना दिया मुझे बहुत तअ़ज्जुब हुआ और लगा कि जब उस्ताद ने एअ़लान (शेष पृष्ठ ३३ पर)

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

हलाकत :

और अपनी जान को हलाकत में मत डालो। (अलबकर : आयत १६५) इस आयत से मालूम हुआ कि कोई काम ऐसा न करना चाहिए जिस का नतीजा हलाकत और बरबादी हो। बाज लोग इस आयत का मतलब यह समझते हैं कि मुश्किल और खतरे की चीजों में न पड़ना चाहिए हालांकि ऐसा नहीं है, कभी ऐसा भी होता है कि मुश्किल और खतरे की चीज में न पड़ने ही से हलाकत और बरबादी होती है।

एक बार कुस्तुनतुनिया में रूमियों से मुसलमानों का मुकाबला हुआ। रूमी कुस्तुनतुनिया की दीवार से बिल्कुल मिले हुए थे। एक मुसलमान ने हिम्मत करके हमला शुरूअ़ किया तो लोग चिल्लाए "हां हां" अपनी जान को हलाकत में मत डालो। हजरत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) साथ थे, बोले वह आयत तो हम अन्सार के बारे में उतरी है। जब इस्लाम ने कुव्वत पकड़ ली और हम लोग अपने रोजी के धन्धे में फंस गये तो यह आयत उतरी। अनुवाद : और अपनी जान को हलाकत में मत डालो।"

सुस्ती और ग़म

और सुस्त न हो और गम न खाओ और तुम ही गालिब रहोगे अगर तुम ईमान रखते हो। (आले इम्रान : १३६)

इस आयत से दो बातें मालूम हुई –

१. एक यह कि आदमी को सुस्त न होना चाहिए, काहिल आदमी कभी काम्याब नहीं हो सकता है। इन्सान को चाक चौबन्द और मेहनती होना चाहिए, किसी काम में सुस्ती न करना चाहिए। अल्लाह तआला फरमाते हैं कि आदमी को वही मिलता जो वह मेहनत करता है।

२. दूसरे यह कि अगर किसी वक्त कोई तक्लीफ पहुंच जाए या किसी मुआमले में नाकामी हो जाए तो उस के ग़म में अपना वक्त न खराब करना चाहिए बल्कि उस वक्त को गनीमत जान कर उस में अपना नुक्सान पूरा करना चाहिए।

इन दोनों बातों का नतीजा यह होगा कि अगर ईमान सच्चा होगा तो काम्याबी और बलन्दी जरूर मिलेगी।

तमस्खुर (हंसी उड़ाना)

ऐ मुसलमानो ! मर्द मर्दों पर न हंसें अजब नहीं कि (जिन पर हंसते हैं) वह खुदा के नजदीक उनसे बेहतर हों और न औरतें औरतों पर हंसें, अजब नहीं कि (जिन पर हंसती हैं) वह उनसे बेहतर हों। (हुजुरात : ११)

मुसलमानों को आपस में एक दूसरे का मजाक न उड़ाना चाहिए। जमाना हमेशा एक हालत पर नहीं रहता है, जो किसी पर हंसता है वह हंसा जाता है। जो लोग ठठा करते और मजाक उड़ाते हैं, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन की हालत इस तरह बयान की है कि एक शख्स को जन्नत का दरवाजा खोल कर बुलाया जाएगा जब हव करीब पहुंचेगा तो दरवाजा बन्द कर दिया जाएगा, फिर दूसरे दरवाजे को खोल कर आवाज दी जाएगी वहां भी यही बरताव होगा। यहां तक कि वह नाउम्मीद होकर जाना छोड़ देगा। उस आदमी ने दुन्या में दूसरों का मजाक उड़ाया था, आखिरत में उस का मजाक उड़ाया गया। सहाबा को लोगों के बडे–बड़े ऐब मालूम होते थे, मगर वह उन को जाहिर कर के उन की हंसी न उड़ाते थे बल्कि छुपाने की कोशिश करते थे। हजरत अबू बक्र सिद्दीक फरमाते थे कि अगर मैं चोर को पकड़ता तो मेरी सब से बड़ी ख्वाहिश यह होती कि खुदा इस के जुर्म पर परदा डाल दे।

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

तौबः

तौबः के शहराइत

उलमा का इत्तिफाक है कि हर गुनाह पर तौबः वाजिब है। अगर गुनाह अल्लाह और बन्दे के दर्मियान है, किसी आदमी के मुतअल्लिक नहीं है, तो उसकी तीन शर्तें हैं। अव्वल यह कि गुनाह से बाज आये। दूसरे यह कि अपने फेल पर नादिम हो, तीसरे यह कि इरादः करे कि गुनाह की तरफ कभी न पलटेंगे। अगर इन तीन शर्तों में कोई पूरी न हुई तो तौबः सही नहीं है। अगर गुनाह आदमी के मुतअल्लिक है तो उसकी चार शर्तें हैं। तीन तो वही जो ऊपर बयान हो चुकी हैं, चौथी यह कि जिसका जुर्म किया हो, उसी से मुआफ करवायें, अगर माल हो तो उसको वापस कर दें, अगर तुहमत वगैरः की कोई सजा उस पर वाजिब होती है तो उसका मौका दे या मुआफ कराये या गीबत की है तो मुआमला साफ कर ले।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दिन में सत्तर–सत्तर और सौ–सौ मर्तबा तौबः और इस्तिगफार करते थे।

हजरत अबू हुरैरः (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है– फरमाया कि खुदा की कसम मै अल्लाह से बख्शिश चाहता हूं और दिन में सत्तर मर्तबः से जियादा तौबः करता हूं। (बुखारी)

हजरत अगिर्र बिन यसार मुजनी र० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ लोगो! अल्लाह से तौबाः करो और बख्शिश चाहो; बेशक मैं दिन में सौ मर्तबः तौबः करता हूं। (मुस्लिम)

अल्लाह की खुशी बन्दे की तौबः से

हजरत अबू हम्जः (रज़ि०) अनस बिन मालिक अल अन्सारी खादिम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – अल्लाह तआला अपने मोमिन बन्दे की तौबः से इतना खुश होता है जैसा कि वह सवार, जिसकी सवारी मय खाने–पानी के किसी चटियल मैदान में खो जाय और वह मायूस होकर एक दरख्त के नीचे सो जाय; जब आंख खुले तो देखे कि वह सवारी खड़ी है। पस वह सवार लगाम पकड़ के खुशी की शिद्दत में यो कहने लगे कि ऐ अल्लाह ! तू मेरा बन्दा है, मैं तेरा रब हूं, और यह गलती इन्तिहाई मसर्रत में उससे सादिर हुई।

तौबः का दरवाजः कियामत तक के लिए खुला रहेगा

हजरत अबू मूसा अल अश्अरी र० से रिवायत है – वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं – फरमाया कि अल्लाह तआला अपना हाथ रात को फैलाता है ताकि दिन का गुनाहगार तौबः कर ले यहां तक कि सूरज अपने डूबने की जगह से निकले। (मुस्लिम)

सकरात तक तौबः मुमकिन

हजरत अब्दुल्लाह र० बिन उमर बिन अल खत्ताब से रिवायत है– वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते है – फरमाया अल्लाह अताला मोमिन बन्दे की तौबः उस वक्त तक कबूल करता है जब तक (मरते समय की) खरखराहट शुरू न हो। (तिरमिजी)

तौबः का दरवाजा बड़ा वसीअ़ है। सूरज के मगरिब की तरफ से निकलने के वक्त तक खुला रहेगा :

हजरत जिर र० बिन हुबैयिश से करते है कि मैं सफवान बिन अस्साल के पास आया और मैंने चमड़े के मोजे पर मस्ह करने के मुतअल्लिक दर्याफ्त किया। उन्होंने कहा ऐ जिर ! तुमको कौन सी हाजत मुझ तक लाई? मैंने कहा, तलाशे इल्म। उन्होंने कहा, उस तालिबे इल्म के लिए जो इल्म की तलब में निकले, फिरिश्ते अपने दोनों बाजू फैला देते हैं। मैंने कहा पायखाना–पेशाब के बाद चमड़े के मोजे पर मस्ह करने के मुतअल्लिक मेरे दिल में खटक है। आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों में से हैं इसलिए मैं आपसे पूछने आया हूं, क्या आप ने इसके बारे में कुछ सुना है? कहा, हां, जब हम मुसाफिरत में होते थे तो हमको हुक्म देते कि तीनदिन और तीन रातें चमड़े के मोजे पायखाना,

पेशाब और सोने के बाद उतारने की जरूरत नहीं (इस पर मस्ह कर लेना काफी है) सिवाय जिनाबत की सूरत में (उसमें उतारना चाहिए)।

मैंने कहा, क्या आपने महब्बत के मुतअल्लिक कुछ सुना है? कहा, हां, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के साथ किसी सफर में थे। हम आपके पास थे कि अअ़राबी ने आपको बुलंद आवाज से पुकारा, "या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। पस आपने उसी आवाज की तरह जवाब दिया, क्या कहते हो? मैंने उससे कहा, अरे नेकबख्त । जरा अपनी आवाज को आहिस्तः कर। तू आं– हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हैं और आप के पास जोर से बोलने की मुमानिअत है। कहा, मैं अपनी आवाज को आहिस्तः न करूंगा। फिर अअ़राबी ने कहा कि आदमी, लोगों से महब्बत करता है, और वह उनके मर्तबः का नहीं होता। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह आदमी जो किसी के साथ महब्बत करता है कियामत में उसी के साथ होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी सिलसिले– गुफ्तगू में मगफिरत के दरवाजे का जिक्र किया कि उसकी चौड़ाई की मसाफत या यों फरमाया कि एक सवार उसकी चौड़ाई में चालीस या सत्तर साल चलेगा। अल्लाह तआला ने उसको उस दिन पैदा किया जिस दिन आसमान व जमीन पैदा किये गये हैं, तौबः के लिए खुला है बन्द न होगा यहां तक कि सूरज मगरिब से निकले। (तिर्मिजी वगैरः)

अल्लाह की तरफ रूजू की क़ीमत

हजरत अबू सअ़ीद अल खुदरी र० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगली कौम में एक आदमी था जिसने निन्नान्नबे खून किये थे। उसने जमीन में सबसे बड़े आलिम के मुतअल्लिक दर्याफ्त किया। लोगों ने एक राहिब का पता दिया, वह उसके पास आया और कहा कि मैंने निन्नान्नबे खून किये हैं, क्या मेरी तौबः भी कबूल हो सकती है? कहा नहीं। उसने राहिब को भी कत्ल कर दिया तो सौ पूरे हो गये। फिर रूए जमीन के सबसे जियादः जानने वाले के मुतअल्लिक दर्याफ्त किया। लोगों ने एक मर्द आलिम का पता दिया। वह गया और कहा कि मैंने सौ आदमी कत्ल किये हैं, क्या मेरी बख्शिश हो सकती है? कहा, हां ! कौन सी चीज तुम्हारे और तौबः के दर्मियान हायल है। तुम फलां जमीन की तरफ जाओ, वहां कुछ लोग अल्लाह की इबादत करते हैं। तुम भी उनके साथ अल्लाह की इबादत करो और फिर इस जमीन की तरफ कस्द न करना क्योंकि वह जगह तुम्हारे लिए बुरी हो गई है। वह रवाना हुआ। आध ा रास्ता तय हुआ था कि मौत का पैगाम आया। रहमत के फिरिश्ते और अजाब के फिरिश्ते झगड़ने लगे। रहमत के फिरिश्ते ने कहा कि यह ताइब होकर और अपने दिल को खुदा की तरफ मुतवज्जेह करते हुए आया है। अजाब के फिंरिश्ते ने कहा कि इसने कभी कोई नेक अमल नहीं किया। उसी वक्त एक फिरिश्ता आदमी की सूरत में आया तो उन्होंने उसको अपने दर्मियान फैसला करनेवाला बनाया। उसने कहा, दोनों जमीनों को नापो, कौन ज़मीन इससे करीब है। उन्होंने नापा तो उस जमीन को जियादः करीब पाया जिसका तरफ वह जा रहा था। तो रहमत के फिरिश्ते ने रूह कब्ज की। (बुखारी, मुस्लिम)

एक सही रिवायत में है कि उस नेक बस्ती के करीब एक बालिश्त से जियादः था तो उसके रहने वालों में शुमार किया गया।

और एक सहीह रिवायत में है कि अल्लाह तआला ने इस जमीन को हुक्म दिया कि दूर हो जा और उस जमीन को हुक्म दिया कि करीब हो जा और कहा, दोनों जमीनों को नापा। जब नापा तो उस जमीन को एक बालिश्त करीब पाया। पस उसको बख्श दिया।

और एक रिवायत में है कि उस आदमी ने अपने को घसीट कर उस जमीन के करीब किया।

सच्चाई और इअतराफ कुसूर की बरकत :

हजरत अब्दुल्लाह (रजि०) बिन कअ़ब बिन मालिक से रिवायत है कि (जब कअ़ब बिन मालिक नाबीना हो गये थे तो यही बेटे उनके साथ चलते थे) कि मैंने कअ़ब बिन मालिक से सुना है गजवए तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे रह जाने का किस्सा यों बयान करते हैं कि मैं किसी गजवह में कभी भी गैरहाजिर नहीं रहा सिवाय गजवए तबूक और गजवए बदर के। और आपने गजवए बदर के अदिम–शिरकत पर किसी पर अ़िताब नहीं फरमाया। बात इतनी थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमान, कुरैश के काफले के इरादे से निकले थे। अल्लाह तआला ने उनको और उनके

दुश्मनों को बगैर किसी वक्त मुकर्रर के जमा कर दिया। और मैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अकबा की रात (की मज्लिस) में शरीक हुआ था। जबकि हमने इस्लाम पर अहद किया था और मैं अकबा की इस शिरकत पर बदर की शिरकत को तरजीह नहीं देता। अगरचे बदर लोगों में ज्यादा मशहूर है।

मेरा किस्सा यह है कि जब मैं ग़ज़्व–तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पीछे रहा उस वक्त मुझ में कुव्वत भी थी और फरागत भी। खुदा की कसम मेरे पास एक छोड़ इकट्ठा दो ऊंट कभी भी नहीं हुए थे लेकिन उस गज्वः में मेरे पास एक छोड़ दो–दो सवारियां थीं। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी गज्वा का इरादा करते थे तो किसी और सम्त के मुतअल्लिक दर्याफ्त फरमाते थे। लोग समझते थे कि आपको उसी की तरफ जाना है, दफ़अतन आप दूसरी तरफ का रूख फरमा लेते । लेकिन इसको जाहिर कर दिया क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस गज्वा की तैयारी सख्त गर्मी में की। दूसर का सफर था, खुश्क व सख्त मसाफत थी और दुश्मनों की बड़ी तादाद का मुकाबला, इसलिए इस मुहिम का इजहार कर दिया था और मुसलमानों को उस सम्त की खबर दे दी थी ताकि पूरे तौर पर तैयारी कर लें। उस वक्त मुसलमानों की तादाद बहुत हो चुकी थी और उनकी कोई फेहरिस्त न थी। अगर आदमी छुपना चाहता तो छुप जाता और किसी को गुमान भी न होता जब तक कि उसके बारे में अल्लाह तआला की तरफ से वही न नाजिल होती।

आपने यह गज्वा उस वक्त किया जब खजूर पक गये थे और साया बड़ा खुशगवार हो गया था। और मुझे इसमें बड़ा मजा आता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और मुसलमानों ने सामान सफर शुरू कर दिया। मैं हर रोज सुबह को इसी इरादः से आता कि मैं भी आपके साथ तैयारी करूं लेकिन यूं ही पलट जाता और कोई फैसला न करता और अपने दिल में कहता कि जब मैं इरादा करूंगा तो चला जाऊंगा। क्योंकि मैं इस पर कादिर हूं और बराबर मेरा यही हाल रहा यहां तक कि सफर की हमा–हमी और सरगर्मी शुरू हो गयी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमान बिल आखिर रवाना हो गये और अब तक मैंने कोई कतई फैसला नहीं किया था। सुबह को आता और कुछ इन्तिजाम किये बगैर पलट जाता। रोजाना यही कैफियत रहती। यहां तक कि आं हजरत और मुजाहिदीन तेज बढ़ गये और मेरे लिये जिहाद का वक्त निकल गया। फिर मैंने इरादा किया कि अब भी चला जाऊं और आपको पा लूं, काश मैं यही करता लेकिन यह भी न किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जाने के बाद जब मैं बाहर निकलता था तो मुझे रंज होता था कि मेरे शरीक–हाल वही लोग थे जो मुनाफिक थे या माजूर और मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने असना–इ–सफर में याद नहीं फरमाया। तबूक पहुंचकर आपने लोगों से दर्याफ्त फरमाया कि कअब बिन मालिक को क्या हुआ। बनी सलमः के एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह! उनको अपनी चादर और झुक–झुककर अपने पहलुओं को देखने में इसकी फुर्सत ही कहां थी कि वह हमारे साथ आते। मआज़ बिन जबल (रज़ि०) ने कहा, बुरी बात तुमने कही। कसम खुदा की या रसूलुल्लाह ! उनमें सिवाय भलाई के और कुछ हम नहीं पाते। फिर आप खामोश हो गये। और आंप इसी हाल में थे कि एक सफैदपोश आदमी गर्द उड़ाता हुआ आ रहा था। आपने फरमाया अबू खुसैमा । तो वह अबू खुसैमा ही थे। यह वही थे जिन्होंने एक साअ़ (साढ़े तीन किलो) खजूरों का सदका किया था तो मुनाफिकीन ने तन्ज किया था। हजरत कअब कहते हैं कि जब मुझे यह खबर पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक से पलटने वाले हैं तो मुझे फिकर शुरू हो गयी और मैं अपने दिल ही दिल में झूठी बातें गढ़ने लगा और मैंने कहा कि मैं कल आपकी नाराजी से क्यों कर बचूंगा और अपने घर वालों में हर साहबे–राय से इस बारे में मदद चाहता। जब यह खबर हुई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम तश्रीफ लाये। आपकी आदत शरीफ थी कि जब किसी सफर से पलटते थे तो पहले मस्जिद में आते थे उसमें दो रकअतें पढ़कर फिर लोगों के पास बैठते थे। जब आप फारिग हुए तो पीछे रह जाने वाले आकर आप से उज्र करने लगे और कसमें खाने लगे। वह कुछ ऊपर अस्सी आदमी थे, आपने उनके जाहिरी दावे कुबूल किये, उनसे बैअत ली। उनके लिए बख्शिश चाही और उनके दिली भेदों को अल्लाह के सिपुर्द किया। फिर मैं आया, जब मैंने आपको सलाम किया तो आप गुस्सा

के अन्दाज में मुस्कुराये और फरमाया आओ। मैं आया और आपके सामने बैठ गया। आपने फरमाया किस सबब से तुम शरीक न हो सके, क्या तुम्हारे पास सवारी न थी? मैंने अर्ज किया – या रसूलुल्लाह! कसम खुदा की अगर मैं किसी दुन्या वाले के पास बैठा होता तो उसकी नाराजगी से अुज्र करके निकल जाता, इसलिए कि मुझमें बहस का माद्दह है। लेकिन मैं समझता हूं कि अगर आज मैं आपसे झूठ बात कह दूंगा तो आप राजी हो जायंगे, मगर करीब है कि अल्लाह तआला आपको नाराज कर दे। और अगर मैं इसमें अल्लाह अज्ज व जल के इन्आम की उम्मीद रखता हूं। मेरे लिए कोई उज्र न था। वल्लाह मैं कभी इतना फारिगुल्बाल नही था जितना कि इस मौके पर। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया – उन्होंने तो सच्ची बात कह दी, जाओ यहां तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे हक में कोई फैसला करे। मैं उठा और मेरे साथ ही बनी सल्मा के कुछ लोग भी उठकर आये और कहने लगे हमको तो मालूम नही कि इससे पहले तुमने कोई गुनाह किया हो। तुम आजिज हो गये और कोई उज्र न कर सके जैसे उज्रख्वाहों ने उज्र पेश किये। अगर तुम भी कोई फैसला करें। मैं उठा और मेरे साथ ही बनी सल्मा के कुछ लौंग भी उज्र कर देते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तुम्हारे लिए बख्शिश चाहना तुम्हारे गुनाह की मुआफी के लिए काफी हो जाता। इसी तरह वह बराबर मलामत करते रहे यहां तक कि मैंने इरादा किया कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ पलट जाऊं और झूठ बोल दूं। फिर मैंने उनसे कहा क्या मेरी तरह कोई और भी है? बोले हां दो आदमी हैं। उन्होंने भी वही कहा जो तुमने कहा और उनसे भी वही कहा गया जो तुमसे कहा गया। मैंने कहा वह कौन है? बोले एक तो मुरारः बिन रबीअः हैं और दूसरे हिलाल बिन उमय्यः हैं। जब मैंने इन दोनों का जिक्र सुना तो घर चला आया क्योंकि उन्होंने ऐसे दो नेक आदमियों का जिक्र किया जो जंग बदर में शरीक थे; वह दोनों मेरे लिए अच्छा नमूना थे।

अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फरमा दिया कि हम तीनों से कोई बात न करे। तो लोग किनाराकश हो गये, और ऐसा रुख बदला गोया कभी जान–पहचान ही न थी। यहां तक कि मुझ पर मेरा नफ्स तंग हो गया। और जमीन वह जमीन ही न रही जिसको मैं पहचानता था। इसी हालत में हम पर पचास रातें गुजर गयीं। मेरे दोनों साथी तो अपने घरों में थककर बैठ गये और रोते रहे। लेकिन मैं जवान आदमी थी, निकलता था, नमाज में शरीक होता था, बाजारों में फिरता था और हमसे कोई बात न करता था। मैं मस्जिद में आता और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम करता, नमाज के बाद आप अपनी मजलिस में तशरीफ रखते। मैं दिल में कहता क्या आपके होंटों को जवाब देने में हरकत हुई। फिर मैं आपके करीब नमाज पढ़ता और छुपी नजर से आपको देखता। जब नमाज की तरफ मुतवज्जिह होता तो आप मुझको देखते और जब मैं आपकी तरफ मुतवज्जिह होता तो आप मुझको देखते और जब मैं आपकी तरफ मुतवज्जिह होता तो आप मुझसे एराज फरमाते।

मुसलमानों की बेरुखी को मुद्दत हो गयी थी। एक दिन मैं अबू कतादा की तरफ गया। वह मेरे चचाजाद भाई थे और मुझे बहुत महबूब थे। मैं उनके बाग की दीवार फांद कर अन्दर पहुंचा और उनको सलाम किया। वल्लाह उन्होंने मेरे सलाम का जवाब तक न दिया। मैंने कहा ऐ अबू कतादा मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं क्या तुम नहीं जानते हो कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल से महब्बत है। वह खामोश रहे। मैंने दुबारा कसम दी मगर वह खामोश रहे। फिर मैंने उनको कसम दी, उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल जियादा जानते हैं। उस वक्त मेरी दोनों आंखों से आंसू गिर पड़े और मैं चला आया।

मैं मदीना के बाजार में फिर रहा था कि एक नब्ती अहले–शाम के नाब्ति में से तिजारत का गल्ला लेकर आया कहता था कि कोई शख्स मुझे कअब बिन मालिक का पता दे सकता है? लोग मेरी तरफ इशारा करने लगे। वह मेरे पास आया और गस्सान के बादशाह का एक खत दिया। मैंने उसको पढ़ा, उसमें लिखा था "मुझे खबर मिली है कि तुम्हारे आका तुमसे नाराज हैं। तुम जिल्लत व नाकद्री की जगह रहने पर मजबूर नही हो, तुम हमारे पास आओ, हम तुम्हारी गमख्वारी करेंगे।" जब मैं उसको पढ़ चुका तो मेरे रंज की कोई हद न रही। मैंने कहा यह और भी मुसीबत है और मैंने उसको तनूर में झोंक दिया।

इसी हालत पर चालीस रातें गुजरीं। वह्य अर्सा से नहीं आयी थी, नागाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम का एक कासिद मेरे पास आया और कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुमको हुक्म देते हैं कि अपने बीवी से अलग हो जाओ। मैंने कहा तलाक दे दूं या क्या करूं। कहा नहीं बल्कि अलग हो जाओ। और उनके करीब न हो। इसी तरह मेरे दोनों साथियों को भी हुक्म पहुंचा। मैंने अपनी बीवी से कहा कि तुम अपने मैके चली जाओ और वहीं रहो जब तक कि अल्लाह तआला इस मुआमले का फैसला न करे। हिलाल बिन उमैया की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आयीं, कहा या रसूलुल्लाह ! इब्नि उमय्यः बूढ़े हैं और कोई खादिम नहीं, क्या आप नापसन्द करते हैं कि मैं उनकी खिदमत करूं। आपने फरमाया – नहीं लेकिन वह तुमसे करीब न हों। उन्होंने कहा खुदा की कसम उनमें कोई हिस व हरकत नहीं, जब से यह किस्सा हुआ है वह बराबर रोते ही रहते हैं।

मुझसे मेरे बाज घर वालों ने कहा कि तुम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी बीवी के बारे में इजाजत तलब करो जैसे हिलाल बिन उमयैया की बीवी ने अपने शौहर की खिदमत की इजाजत ली है। मैंने कहा मैं इजाजत न मांगूंगा। मैं नहीं जानता कि आप क्या जवाब देंगे, इसलिए कि मैं जवान आदमी हूं। किस्सा मुख्तसर इसी हालत पर हमने दस रातें और गुजारीं तो पूरी पचास रातें हो गयीं। मैंने पचासवीं रात की सुबह को अपने घर की छत पर नमाज पढ़ी; मैं उसी हालत में बैठा था जिसका नक्शा अल्लाह ने खींचा है। मुझ पर मेरा नफ्स तंग हो गया था और जमीन, वुस्अत के बावजूद मुझ पर तंग हो गयी थी कि मैंने कोह–सिलअ से एक चीख सुनी कोई बलन्द आवाज से कह रहा था, "ऐ कअ़ब बिन मालिक ! तुमको बशारत हो। यह सुनते ही मैं सज्दे में गिर पड़ा और मैंने समझ लिया कि मसर्रत की घड़ी आ गयी। सुबह की नमाज पढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह अज्ज व जल की तरफ से हमारी तौबा की कुबूलियत का एलान किया। लोग हमको बशारत देने लगे और कुछ लोग मेरे दोनों साथियों की तरफ बशारत देने के लिए चले गये। एक घुड़सवार दौड़ता हुआ आया और एक अस्लम के कबीले का आदमी पैदल आया और पहाड़ पर चढ़ा। उसकी आवाज घोड़े से भी जियादा तेज थी। जब वह मेरे पास आया और मुझको बशारत सुनाने लगा तो (खुशी में) मैंने अपने दोनों कपड़े उतार कर उसको पहना दिये। वल्लाह मैं उस वक्त उन्हीं दो कपड़ों का मालिक था। फिर मैंने दो कपड़े मुस्तआर लिए और उनको पहनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाने के इरादे से चला। लोग मुझसे जूक–जूक मिलते थे और तौबा की मुबारकबाद देते थे और कहते थे तौबा की कुबूलियत मुबारक हो। यहां तक कि मैं मस्जिद में आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे थे और लोग आपके गिर्द और बढ़कर मुझसे मुसाफह किया और मुबारकबाद दी। वल्लाह मुहाजिरीन में उनके सिवा कोई न खड़ा हुआ। मैं तलहः का यह इहसान नहीं भूल सकता। जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया तो आपने फरमाया (और आपका चेहरा मुबारक खुशी से दमक रहा था) – जिन्दगी का मुबारकतरीन दिन तुमको मुबारक हो। मैंने कहा यह आपकी तरफ से है या अल्लाह तआला की तरफ से? फरमाया नहीं बल्कि यह अल्लाह अज्ज व जल्ल की तरफ से है।

जब आप खुश होते थे तो आपका चेहरा मुबारक ऐसा दमकता था गोया चान्द का एक टुकड़ा है। हम उसको पहचानते थे। जब आपके पास बैठा तो मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं इस खुशी में अपना माल सदकः के तौर पर अल्लाह और उसके रसूल के लिए छोड़ता हूं। आपने फरमाया, कुछ माल अपने लिए रोक रक्खो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। कहा या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला ने मुझको सच्चाई के सबब नजात दी। अब मेरी तौबा का यह नतीजा होना चाहिए कि जब तक जिन्दा रहूं सच ही बोला करूं और कसम खुदा की जबसे मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच–सच कह दिया, आज के दिन तक झूठ बोलने का फिर इरादा नही किया और मेरे अिल्म में सच बोलने में किसी पर अल्लाह तआला ने ऐसा फज्ल नही किया जैसे मुझ पर फरमाया है। और मैं उम्मीद करता हूं कि जब तक कि जिन्दा रहूंगा अल्लाह तआला मेरी हिफाजत करेगा।

जो आयत हम लोगों के मुतअल्लिक नाजिल हुई थी वह यह थी :–

अल्लाह तआला ने तवज्जुह फरमायी नबी पर और मुहाजिरीन और अन्सार पर और उन लोगों पर जिन्होंने

(शेष पृष्ठ २६ पर)

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अ़ली ह़सनी

जकात जो इस्लाम का दूसरा रूकन अथवा स्तम्भ है

जकात इस्लाम का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है, और कुरआन मजीद में तीस से अधिक स्थानों पर इसका नमाज के साथ वर्णन किया गया है इसको अनेक स्थानों पर नमाज के समान इस्लाम की पहचान और आज्ञापालन कर चिन्ह माना गया है। यह हर समझदार, बालिग तथा एक निश्चित एवं निर्धारित धन राशि (निसाब) के मालिक का फर्ज है। निसाब उस निश्चित मात्रा की धनराशि को कहते हैं जिसके मौजूद होने पर जकात फर्ज होती है, परन्तु शर्त यह है कि वह निश्चित्र मात्रा उस व्यक्ति की मूल आवश्यकताओं से अधिक हो। निसाब प्रत्येक वस्तु का अलग अलग है। सोने का निसाब साढ़े सात तोला है। चान्दी का निसाब साढ़े बावन तोला अर्थात जिसके पास इतनी मात्रा में सोना चांदी हो और वह उसकी आवश्यकता से अधिक हो तथा पूरा वर्ष उसके रहते हुए व्यतीत हो जाए तो उस व्यक्ति पर उसका चालीसवां भाग (ढाई प्रतिशत) खुदा की राह में देना वाजिब है। सोने चांदी के अतिरिक्त व्यापार संबंधी माल पर भी यदि उसका मूल्य निसाब के बराबर है, जकात फर्ज है, इसी प्रकार भूमि की उपज पर भी जकात है। यदि वर्षा के पानी से उपज हुई है, या नदी के किनारे पर तराई में कोई वस्तु बोई और बिना सींचे पैदा हो गई तो ऐसे खेत में जो कुछ उपज हुई है, उसका दसवां भाग दान कर देना चाहिए और अगर खेत को पुर या रहट चला कर या किसी अन्य साधन द्वारा खींचा है, तो उपज का बीसवां भाग दान करना चाहिए।

चौपायों, ऊंट, गाय, बकरी आदि की भी जकात है। जकात वर्ष में एक बार फर्ज है। जकात लेने के अधिकारी दीन रंक तथा निर्धन और जकात के प्रबन्ध के सिलसिले में काम करने वाले हैं।

जकात टैक्स या जुर्माना नहीं अपितु स्वयं एक इबादत तथा ईश्वरीय अर्थ व्यवस्था है।

जकात के बारे में यह स्मरण रखना चाहिए कि वह कोई टैक्स या जुर्माना अथवा सरकारी मतालबा मात्र नहीं है, वह नमाज, रोज़े के समान एक मुस्तकिल इबादत है और खुदा से करीब होने का एक साधन तथा नैतिक सुधार एवं प्रशिक्षण की एक ईश्वरीय व्यवस्था है। अतः धार्मिक विद्वानों के मतानुसार इसके लिए नियत फर्ज है, यदि बिना नियत किये जकात अदा करेगा तो नमाज की भांति जकात भी अदा नहीं होगी इसके अदा करने में भी अहंकार, अनुग्रह गर्व एवं अभिमान की भावना लेशमात्र न होना चाहिए वरन् नम्रता, विनय तथा कृतज्ञता का भाव विद्यमान होना चाहिए और अपनी अपेक्षा स्वीकार करने वाले को उपकारी समझना चाहिए। जकात के वास्तविक अधिकारियों की स्वयं खोज करना तथा उनका चयन एवं व्यवस्था भी वांछित है। यह भी अच्छा समझा गया है कि एक ही स्थान के मालदारों से निकल कर वहीं के निर्धनों में वितरित किया जाय (सिवाय इसके कि वहां उसके अधिकारी न पाये जाते हों) कुरआन मजीद में जकात को व्याज का (जो इस्लाम में पूर्णतया अवैध है) बिल्कुल प्रतिद्वन्द्वी तथा विलोम बताया गया है। और जितनी जकात की प्रशंसा की गयी है उतनी ही व्याज की निन्दा की गयी है।

सामान्य दान पुण्य एवं खैरात

यह भी बताया गया है कि जकात अदा करने के बाद भी जिस से धनी (निसाब वाला) अपने कर्तव्य से निवृत्त तथा भारमुक्त हो जाता है, धन में निर्धनों एवं दीन, दरिद्रों का हक तथा अन्य दान पुण्य में उनका भाग है। (माल में जकात के अतिरिक्त भी निर्धनों का अधिकार है)

इससे दान का आरम्भ होता है, अन्त नहीं होता। इस्लाम ने जकात लेने वालों तथा दान लेने वालों के किसी विशिष्ट एवं चिरस्थायी वर्ग को मान्यता नहीं दी है, जिसका आधार किसी वंश, जाति तथा व्यवसाय पर हो, वरन् उसने पैगम्बर–ए–इस्लाम के खानदान बनी हाशिम को सदैव के लिए जकात तथा खैरात से वंचित कर दिया। इस प्रकार मुसलमानों में धार्मिक तथा विशिष्ट वर्ग सम्बन्धी ठेकेदारी के लिए लेश मात्र स्थान नहीं।

रोजा इस्लाम का तीसरा रूकन (सतम्भ) है जो हर समझदार तथा बालिग मुसलमान पर फर्ज है।

रोजा इस्लाम का तीसरा रूकन है और वह भी समझदार बालिग मुसलमान पर फर्ज है। हां यदि वह रोजे के जमाने में बीमार अथवा यात्रा करं रहा है, तो वह उस समय रोजा छोड़ सकता है, परन्तु उसको दूसरे समय कजा करना पड़ेगा। खुदा ने रोजे के लिए रमजान (इस्लामी कैलैण्डर का नवां महीना) के पवित्र मास का चयन किया है, जिसको कुरआन मजीद से विशिष्ट अनुकूलता है और विशेष अनुकम्पा तथा सम्पन्नता का महीना है।

रमजान के आने से मस्जिदों की शोभा में अभिवृद्धि तथा मुसलमान घरों में बहार आ जाती है

रमजान का चांद दिखाई देने के साथ ही रमजान, उसकी इबादतें (उपासनाएं) और उसके विशेष आध्यात्मिक कार्य एवं क्रियाएं तथा आलोकमय वातावरण का शुभारम्भ हो जाता है। मुसलमानों के घरों तथा बस्तियों में जीवन की नई लहर विदित होने लगती है। यह महीना यद्यपि धैर्य एवं आत्म–संयम, गंभीरता एवं सहिष्णुता और अनेक असाधारण प्रतिबन्धों एवं सावधानियों का सन्देश लेरक आता है परन्तु सामान्य रूप से इसका स्वागत हर्ष एवं उल्लास बल्कि स्नेहपूर्ण भाव से किया जाता है, और धार्मिक अभिरूचि तथा कुरआन मजीद से प्रेम तथा अनुराग रखने वालों के लिए तो मानो बहार आ जाती है। घरों में चहल पहल और मस्जिदों की शोभा में अभिवृद्धि हो जाती है। प्रतिदिन इशा की नमाज पढ़ कर सब अपने अपने घर चले जाते थे और अपने कामों में लग जाते थे परन्तु रमजान की चांद रात्रि में कुछ औरही बात विद्यमान होती है। आज कुछ नमाजियों में भी वृद्धि दिखाई देती है और कुछ नमाज में भी। नमाजियों में वृद्धि इस कारण, कि बहुत से मुसलमान जो मकान या दुकान में नमाज पढ़ लेते थे, और देर सबेर का भी उनको कुछ अधिक ध्यान न था, आज चाक चौबन्द तथा हश्शाश बश्शाश मस्जिद में दिखाई दे रहे हैं।

नमाज तरावीह तथा कुरआन मजीद का अखण्ड पाठ

और नमाज में अभिवृद्धि यह कि इशा की दो सुन्नतों के बाद आज तरावीह की नमाज होगी । तरावीह दो दो करके बीस रकअतों की नमाज होती है। हर दो रकअत के बाद सलाम फेरा जाता है। इसमें कुरआन शरीफ क्रमबद्ध रूप से पढ़ा जाता है। कहीं प्रतिदिन एक पारा, कहीं दो पारे और कहीं पांच तथा कहीं दस। तरावीह में कुरआन मजीद पूरा समाप्त किया जाता है। कदाचित ही कोई ऐसा असाहसी मुसलमान होगा जो सम्पूर्ण कुरआन मजीद सुनने के बजाए कुछ सूरतों के सुनने को पर्याप्त समझे। ऐसे ऐसे उत्कृष्ट हाफिज भी हैं जो दस दस और पन्द्रह पन्द्रह पारे भी एक रात में सुना देते हैं, और कुछ तो रात भर में सम्पूर्ण कुर्आन मजीद पढ़कर ही दम लेते हैं। मुसलमान प्रायः बड़े जौक शौक से तरावीह पढ़ते हैं और कभी इसमें एक घण्टा, कभी दो घण्टा और कुरआन मजीद पढ़ने की मात्रानुसार कभी तीन तीन चार चार घंटे लगा देते हैं।

पिछले पहर उठकर सहरी खाना

रात को सुबह सादिक से पूर्व (रोजे की ताकत पैदा करने और ताकि भूख, प्यास अधिक न सताय) कुछ खा लिया जाता है। इसको शरीअत की परिभाषानुसार "सहूर" तथा हिन्दुस्तान में "सहरी" कहते हैं। यह सुन्नत भी है और इसके प्रति प्रेरणा भी दी गयी है। इस में अपनी अपनी रूचि तथा अपनी आवश्यकता एवं अवस्थानुसार कमी अथवा जियादती भी होती है तथा खाद्य सामग्री में विभिन्नता भी होती है। सुबह सादिक आरम्भ होने पर खान पान समाप्त हो जाता है और प्रायः लोग कुछ पहले ही खाना पीना बन्द कर देना उचित समझते हैं।

अब रोजा आरम्भ हो गया, अब सूर्यास्त तक किसी भी प्रकार का खान पान एवं काम सम्बन्धी क्रियाएं सर्वथा वर्जित हो गई।

रोजा और ब्रत अथवा उपवास में अन्तर

इस्लामी रोजा, हिन्दुस्तान के प्रचलित धार्मिक ब्रत के दिनों तथा भोजन त्याग देने की उन विधियों से जो स्वास्थ्य रक्षा तथा चिकित्सा सम्बन्धी आवश्यकताओं हेतु अपनाई जाती हैं, सर्वथा भिन्न है। इस्लामी रोजे में किसी भी प्रकार का खान पान यहां तक कि दवा का भी हलक से उतारना और निगलना वर्जित है। आहार तथा खाने पीने में भी किसी प्रकर की कोई विशेषता नहीं कि अन्न अवैध हो और फल वैध हो। इस प्रकार की किसी भी वस्तु का सेवन करने से रोजा टूट जाता है, और अगर इस प्रकार की

क्रिया जान बूझ कर की गयी है तो उसके जुर्माने के तौर पर निरन्तर साठ रोजे रखने पड़ेंगे हो यदि किसी व्यक्ति को इसका ध्यान नहीं रहा कि वह रोजे से है और भूल से कुछ खा पी गया तो इससे रोजा नहीं जाएगा।

रमजान में इबादत के प्रति रुचि तथा धार्मिक क्रियाओं में व्यवस्तता

इस महीने में सामान्य रूप से लोगों की उपासना के प्रति रुचि तथा धार्मिक कार्यों में तत्परता एवं लीनता की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। प्रत्येक रोजे दार कुरआन मजीद की थोड़ी बहुत तिलावत (पाठ) करना आवश्यक समझता है। उपकार, अनुग्रह, सदभावना, संवेदना एवं सहानुभूति की भावना भी जागरूक और अगर पहले से विद्यमान होती है तो प्रगतिशील एवं उन्नतशील हो जाती। इस कारण कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस महीने को संवेदना एवं सहानुभूति का महीना कहा है ओर इसमें एक पैसा उचित कार्यों में व्यय करने से सत्तर पैसों का सवाब (प्रतिफल) मिलता है।

रोजे की दशा में जो बातें निषिद्ध हैं

रोजा केवल पुण्यात्मक तथा वैध क्रियाओं का पालन करना मात्र नहीं अपितु कुछ बातों से बचने तथा न करने की भी क्रिया है। इसमें व्यर्थ एवं अनावश्यक बातें झूठ, मिथ्या, परोक्ष निन्दा एवं वे समस्त दुष्कार्य जो पहले से ही निन्दित थे, और अधिक निकृष्ट हो जाते हैं। एक हदीस शरीफ में स्पष्ट रूप से अवगत करा दिया गया है कि जिस ने रोजे (की दशा) में झूठ बोलना और मिथ्याचरण करना न छोड़ा तो अल्लाह को इस बात की कदापि आवश्यकता नहीं कि आदमी अपना खाना पीना छोड़ दे।

इफतार की तैयारी और उस समय हर्षोल्लास

लीजिए बात करते करते रोजा इफतार करने का समय आ गया। मुसलमानों के घरों और मस्जिदों में पहले से इफतार की तैयारियां हो रही थीं। यह कुछ स्वाभाविक बात भी है कि भूखे, प्यासे रहने के बाद आदमी में खाने पीने की प्रति लालसा और ईश्वरीय देन के प्रति आदर की भावना में वृद्धि हो जाती है, और शरीअत ने भी इस प्रसन्नता को जो रोजेदार के इफतार के समय होती है, रोजे का एक पुरस्कार और मानव प्रवृत्ति का एक अधिकार मात्र स्वीकार किया है। कहा गया है कि रोजेदार को दो आन्नद प्राप्त होते हैं, एक इफतार के समय और एक अपने पालनहार से भेंट के अवसर पर जब उसको रोजे का पुरस्कार मिलेगा। रोजेदारों की निगाहें स्वाभाविक रूप से पश्चिम की ओर हैं या अपनी घड़ियों पर अथवा मुअज्जिन के अधरों पर इस समय की कुछ अल्लाह के बन्दे अपनेसमय का मूल्य चुकाने में लगे हुए हैं और एक क्षण व्यर्थ किये बिना कुरआन मजीद की तिलावत या अल्लाह का नाम लेने में व्यस्त हैं, कि यह मूल्यवान समय फिर हाथ न लगेगा।

इफतार

सहसा मुअज्जिन की ध्वनि कानों से टकराई "अल्लाहु–अकबर, अल्लाहु अकबर" और अपनी अपनी बस्ती के रिवाज के अनुसार गोला दगा अथवा मस्जिदों के मीनारों से रोशनी चमकी – "अल्लाहुम्मलक–सुमतु–व–बिक आमन्तु–व–अला रिज्किक–अफतरतु" (ऐ अल्लाह ! तेरे लिए मैंने रोजा रखा, तुझ पर ईमान लाया और तेरे दिये हुए रिज्क पर अब रोजा खोल रहा हूं) "बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम" लीजिए रोजा खुल गया, मगर संतुष्टि पूर्ण पेट भर भोजन करने का अभी अवसर नहीं कि मगरिब की नमाज तैयार है। कुछ लोग इसी इफतार को इफतार और खाना बना लेते हैं। हिन्दुस्तान में अधिकतर लोग मगरिब की नमाज पढ़कर भोजन करते और अपने नित्य कार्यों की पूर्ति करते हैं।

खजूर से रोजा खोलना शुभ माना जाता है, कि वह शुद्ध खाद्य पदार्थ भी है और सुन्नत भी, "हम खुर्मा व हम सवाब"। इफतार में भी हिन्दुस्तान में विशेष आयोजन एवं वेराइटीज पाई जाती हैं और यहां कई ऐसी चटपटी वस्तुएं तैयार की जाती हैं जो दूसरे देशों में नहीं पाई जाती है। इनका बड़ा अंश चना है जो भारत की विशेष उपज है।

मस्जिदों में कुरआन मजीद पाठ की समाप्ति तथा समापन समारोह

अब रोजे की दिनचर्या वही रहेगी जिसका ऊपर वर्णन किया गया। कुर्आन मजीद रमजान मास की विभिन्न तारीखों में समाप्त होगा। तरावीह तो पूरे रमजान में हैं, हां, एक कुरआन मजीद पूर्ण रूप से सुन लेना मुसलमान आवश्यक समझते हैं। कुछ होशियार लोग किसी एक मस्जिद में पांच सात दिन में कुरआन मजीद सुन लेते हैं, फिर शेष मास में हल्की फुल्की तरावीह

पढ़ते रहते हैं। लेकिन इससे आलसपन विदित होता है और धार्मिक भावना के प्रतिकूल है। सामान्यत: सत्ताइसवीं रात्रि या इसके आस पास कुरआन मजीद मस्जिदों में समाप्त होते हैं, और हिन्दुस्तान में इस अवसर पर मिठाई बांटने का भी आम रिवाज है।

रमजान के अन्तिम दशक में एअतिकाफ

रमजान के अन्तिम अशरा (दहे) का एअतिकाफ भी बड़े सवाब का काम और एक प्रिय सुन्नत है। बीसवें रोजे को सूर्यास्त होने के समय बहुत से दीनदार मुसलमान एअतिकाफ की नियत से मस्जिद में आ रहे हैं। अब वह ईद का चांद देख कर ही मस्जिद से बाहर निकलेंगे। एअतिकाफ की दशा में शौच आदि के अतिरिक्त मस्जिद से बाहर जाना मना है। वुजू भी मस्जिद की सीमा के भीतर ही किया जाता है। एअतिकाफ क्या है, मानो खुदा की चौखट पर आकर बिल्कुल पड़ ही गये। अपने घर बार को भी सलाम किया और घर वालों तथा निकट सम्बन्धियों से भी कह दिया कि बस ईद का चांद देख कर ही तुमसे मिलने आयेंगे। सामान्य रूप से एअतिकाफ के कारण लोगों को इबादत करने और रमजान का मूल्य चुकाने का शुभ अवसर प्राप्त हो जाता है और बहुत से कमजोर इरादे के लोग अनेक व्यर्थ बातों तथा सांसारिक चिख चिख से बच जाते हैं।

शबे कद्र की बरकत तथा उसमें इबादत करने का विशिष्ट आयोजन

यों तो रमजान के पूरे अन्तिम दहले का बड़ा महत्व है, परन्तु शबे कद्र (एक शिष्टि रात्रि) जो बड़ी बरकत की रात है, और जिसके नाम पर कुरआन मजीद की एक पूरी सूरे है। (सूरतुल कद्र) विशेष तौर पर श्रेष्ठता एवं सम्पन्नता की रात्रि है, इसको कुरआन शरीफ में एक सहस्र रात्रियों से उत्तम कहा गया है। यह रमजान मास के अन्तिम दहले की किसी विषम रात ...... (इक्कीसवीं, तेइसवीं आदि) में हो सकती है, परन्तु सत्ताइसवीं रात्रि को मुसलमान अधिक मान्यता देते हैं कि इसमें शबे कद्र होने का अनुमान है।

ईद के चांद पर रमजान समाप्त हो जाता है

दिन व्यतीत होते देर नहीं लगती और २६, ३० दिन की गिनती ही क्या अभी उपासना एवं अध्यात्मिकता के प्रलोभियों की तृप्ति एवं सांत्वना भी नहीं हुई थी, और उनको (और अधिक, और अधिक) की लौ लगी थी। जितने दिन गुजरते जाते थे, जन साधारण को भी रोजों के प्रति अधिक अनुकूलता उत्पन्न होती जाती थी कि मास की अन्तिम तिथि आ गई, रमजान के चल चलाओ का समय आ गया तथा भविष्य में एक वर्ष पश्चात् आने का वचन देकर मुसलमानों से विदा हुआ। ईद का चान्द निकल आया। आभार युक्त धैर्य का स्थान धैर्य पूर्ण आभार ने ग्रहण कर लिया। खुदा का एक अतिथि एवं दूत विदा हुआ, दूसरा अतिथि पधारा वह भी आदेश था यह आदेश आज तक दिन में खाना पीना अवैध था, कल दिन में न खाना गुनाह होगा।

सुब्ह जब नींद से जागें तो पढ़ें :

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी अह्याना बअ्द मा अमातना व इलैहिन्नुशूर। और सोने से पहले पढ़ें : अल्लाहुम बिस्मिक अमूतु व अह्या

मायूस मत हो ऐ दिल

खैरुन्निसां बेहतर

मायूस मत हो ऐ दिल
दस्ते दुआ उठा कर
फेरेगा वह न ख़ाली
दर से तुझे बुलाकर
थम जा ज़रा न घबरा
अब्रे करम है छाया
आएगा थम थमा कर
बरसे गा झम झमाकर
ज़ायेअ़ नहीं वह करता
मेहनत कभी किसी की
देगा ज़रूर इक दिन
मांगो तो गिड़गिड़ाकर
ज़ाहिर में दूर है वह
पर है क़रीब सबसे
सारी ख़बर है उसको
चाहे जो तू दुआ कर
कुछ याद भी है तुझ को
कब कब तुझे संभाला
किन किन मुसीबतों से
आख़िर बचा बचाकर
तेरी यह आहो ज़ारी
तेरी यह बे क़रारी
उसको बहुत है प्यारी
देता है वह रुला कर
रहना कभी न ग़ाफ़िल
दम भर भी उस से बेहतर
हर दम ख़ुदा ख़ुदा कर
हर दम ख़ुदा ख़ुदा कर

किस्त चार

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

जूद व सख़ा (सख़ावत, उदारता)

जूद व सखा आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की फितरत थी। इब्न अब्बास रज़ि० की रवायत है कि आप तमाम लोगों से ज़ियादा सखी थे और खासकर रमज़ान के महीने में आप और ज़ियादा सखावत करते थे। तमाम उम्र किसी के सवाल पर "नहीं" का लफ़्ज़ नहीं फ़रमाया। (बुखारी)

हदीस का तर्जुमः " मैं तो सिर्फ देने बांटने वाला और ख़ाजिन हूं। और देता अल्लाह है। एक दफ़ा एक शख़्स खिदमते अक़दस में आया और देखा कि दूर तक आप की बकरियों का रेवड़ फैला हुआ है, उसने आपसे दरख़्वास्त की और आपने सब की सब दे दीं उसने अपने क़बीले में जा कर कहा इस्लाम कुबूल कर लो। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ऐसे फैय्याज़ (उदार) हैं कि गरीब हो जाने की परवाह नहीं करते। एक दफ़ा एक शख़्स ने कुछ मांगा। आपने फ़रमाया, इस समय मेरे पास कुछ नहीं है। तुम मेरे साथ आओ, हजरत उमर रज़ि० भी साथ थे, अर्ज किया कि आपके पास कुछ मौजूद नहीं तो आप पर क्या जिम्मेदारी है? एक और साहब हाजिर थे उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह आप दिये जाएं और अर्श वाले खुदा से न डरिये वह आपको मुहताज न करेगा। आप खुश होकर मुस्करा दिये। (बुखारी)

आम फैयाजी का यह हाल था कि जो शख़्स आप की ख़िदमत में हाज़िर होता, अगर आप के पास कुछ सरमाया मौजूद होता तो उसको कुछ न कुछ ज़रूर अता फरमाते, देते, वरना वायदा फरमाते। इस मामूल (दिन चर्या) की बिना पर लोग इस क़दर दिलेर हो गये थे कि एक मर्तबा ऐन इक़ामते नमाज़ के वक्त एक बद्दू आया आप का दामन पकड़कर कहा कि मेरी एक मामूली सी ज़रूरत बाकी रह गयी है, डर है कि मैं उसे भूल न जाऊं उसको पूरा कर दीजिए, अतः आप उसके साथ तशरीफ ले गये और हाजत बरारी कर के आये तो नमाज पढ़ी। (सही बुखारी)

बाज़ औकात ऐसा होता है कि एक शख़्स से एक चीज खरीदते क़ीमत चुका देने के बाद फिर वह चीज उसको भेंट कर देते। अतः एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० से एक ऊंट खरीदा और फिर उसी समय उसको अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को दे दिया। हज़रत जाबिर रज़ि० के साथ भी इसी प्रकार की एक घटना का ज़िक्र आया है। (बुखारी)

खाने पीने की चीजों में मामूली सी मामूली चीज भी तन्हा न खाते, बल्कि तमाम साथियों को शरीक फरमा लेते। किसी गज़वा में १३० सहाबा साथ थे। आपने एक बकरी खरीद कर ज़िबह करवाई और कलेजी के भूनने का हुक्म दिया। वह तैयार हुई तो तमाम सहाबा को तक़सीम फ़रमाया जो लोग मौजूद न थे उनका हिस्सा अलग महफ़ूज़ रखा। (सही मुस्लिम)

जो चीज़ आप सल्ल० के पास आती जब तक खर्च न हो जाती आप को चैन न आता। बेक़रारी सी रहती। उम्मुल मोमिनीन उम्मे सल्मा रज़ि० बयान करती हैं कि एक दफा आप सल्ल० घर में तशरीफ लाये तो चेहरा बदला हुआ (मुतगैय्यिर) था। उम्मे सल्मा ने अर्ज किया, या रसूलुल्लाह ! खैर है? फ़रमाया कल जो सात दीनार आये थे शाम हो गयी और वह बिस्तर पर पड़े रहे गये। (मुस्नद इब्न हंबल)

हज़रत अबूज़र रज़ि० बयान करते हैं कि एक रात को वह आप सल्ल० के साथ एक रास्ता से गुजर रहे थे। आप ने फ़रमाया, अबूज़र! अगर उहद का पहाड़ मेरे लिए सोना हो जाये तो मैं कभी पसन्द न करूंगा कि तीन रातें गुजर जायें और मेरे पास एक दीनार भी रह जाये। लेकिन हां वह दीनार जिसको मैं कर्ज अदा करने के लिए छोड़ दूं। (बुखारी)

अक्सर यहां तक मामूल था कि घर में नक़द की किस्म से कोई चीज मौजूद होती तो जब तक कुल ख़ैरात न कर दी जाती घर में आराम न फरमाते। फिदक के रईस ने एक दफा चार ऊंट पर गल्ला बार कर के आप की खिदमत में भेजा। हजरत बिलाल रज़ि० ने बाजार में गल्ला बेचकर एक यहूदी का कर्जथा वह अदा किया। फिर आप की खिदमत में आकर इत्तेला की। आपने पूछा कुछ बचा तो नहीं रहा, बोले हां कुछ बच भी रहा। फरमाया कि जब तक कुछ बाकी रहेगा मैं नहीं

जा सकता। हज़रत बिलाल ने कहा मैं क्या करूं, कोई साइल (मांगने वाला) नहीं। आप सल्ल० ने मस्जिद में रात बसर की। दूसरे दिन हज़रत बिलाल ने आकर कहा था कि रसूलुल्लाह! खुदा ने आप को सुबुकदोश (भार उतारना) कर दिया, यानी जो कुछ था वह भी तक़सीम कर दिया गया। आपने खुदा का शुक्र अदा किया और उठ कर घर तशरीफ ले गये। (अबू दाऊद)

इसी तरह एक बार अस्र की नमाज पढ़कर खिलाफे मामूल फौरन घर के अन्दर तशरीफ ले गये और फौरन निकल आये। लोगों को तअज्जुब हुआ। आप ने फरमाया मुझको नमाज में ख्याल आया कि कुछ सोना घर में पड़ा रह गया है। गुमान हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि रात हो जाये और वह घर में पड़ा रह जाय, इसलिए जाकर उसको खैरात कर देने को कह आया। (बुखारी)

गजव–ए–हुनैन में जो कुछ मिला आप सल्ल० उसको ख़ैरात फ़रमा कर वापस आ रहे थे। राह में बद्दुओं को ख़बर मिली कि इधर से आप का गुज़र होने वाला है। आस पास से दौड़ दौड़ कर आये और लिपट गये कि हमें भी कुछ इनायत हो। आप भीड़ से घबराकर एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गये। उन्होंने पवित्र चादर थाम ली। आखिरकार इस कशमकश में आप सल्ल० के पवित्र शरीर से चादर उतर कर उनके हाथ में रह गई। फ़ैयाज़े आलम ने कहा कि मेरी चादर दे दो। खुदा की कसम अगर इन जंगली पेड़ों के बराबर भी ऊंट मेरे पास होते तो मैं सब तुम को दे देता और फिर मुझ को बखील (कंजूस) न पाते, न दरोग़गो (झूठा), न नामर्द । (बुखारी)

लोगों को आम हुक्म था कि जो मुसलमान मर जायें और अपने जिम्मे कर्ज छोड़ जायें तो मुझे खबर करो, मैं उसको अदा कर दूंगा, और जो तर्क छोड़ जाये वह वारिसों का हक है। मुझे इस से कोई मतलब नहीं। (बुखारी) एक दफा आप सहाबा के मजमः में तशरीफ फरमा थे। एक बद्दू आया और आपकी चादर का कोना जोर से खींच कर बोला, मुहम्मद ! यह माल न तेरा है न तेरे बाप का है, एक बारे शुतर दे। आपने उसके ऊंट को जौ और खजूरों से लदवा दिया। (अबू दाऊद)

एक बार बहरीन से टैक्स आया। और इतनी अधिक रक़म थी कि इससे पहले कभी खजाने में नहीं आई थी। आपने हुक्म दिया कि इसको मस्जिद के आंगन में डलवा दो। उसके बाद जब आप मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो उसपर मुड़कर भी नज़र न डाली। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप ने उसकी तक़सीम शुरू की जो सामने आता उसको देते चले जाते। हज़रत अब्बास रज़ि० को जो ग़ज़व–ए–बदर के बाद दौलत मन्द नहीं रहे थे, इतना दिया कि उठकर चल नहीं सकते थे। इसी तरह और लोगों को भी देते जाते थे, जब कुछ न रहा तो कपड़े झाड़ कर उठ खड़े हुए। (बुखारी)

एक दफा चन्द अन्सार ने आप से कुछ मांगा। आपने दे दिया। फिर जब तक रहा आप देते रहे यहां तक कि आप के पास कुछ नहीं रहा, लेकिन वह इसके बावजूद हाज़िर हुए और दरख़्वास्त की। फरमाया मेरे पास जो कुछ हो मैं उसको तुम से बचाकर नहीं रखूंगा। (बुखारी)

ईसार (त्याग)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के अखलाक व आदात में जो वस्फ (गुण) सब से जियादा नुमाया (स्पष्ट) और जिसका असर हर मौके पर नजर आता था वह ईसार था। औलाद से आप को बे इन्तेहा महब्बत थी और उनमें हज़रत फ़ात्मा इस कदर अज़ीज़ थीं कि जब आतीं तो मारे खुशी के खड़े हो जाते, पेशानी को बोसा देते और अपनी जगह बिठाते। ताहम हज़रत फ़ात्मा की गरीबी का हाल यह था कि घर में कोई खादिमा न थी, खुद चक्की पीसतीं, खुद ही पानी भर लातीं, चक्की पीसते पीसते हथेलियां घिस गई थीं और मशक के असर से सीना पर नील पड़ गये थे। एक दिन खिदमते अक़दस में हाजिर हुईं, खुद तो हया के मारे कुछ कह न सकीं। जनाब अमीर रज़ि० ने उनकी तरफ से यह हाल अर्ज़ किया और दरख्वास्त किया कि फुलां गजवः में जो कनीजें (दासियां) आई हैं उनमें से एक कनीज़ मिल जाये। आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, अभी असहाबे सुफ्फा का इन्तेज़ाम नहीं हुआ और जब तक उनका बन्दोबस्त न हो ले मैं और तरफ ध्यान नहीं दे सकता। (अबू दाऊद)

एक बयान यह है कि हज़रत जुबैर की बेटियां और हज़रत जुहरा रज़ि० खिदमते अकदस में गईं और अपनी गुरबत और तंगदस्ती की शिकायत की और अर्ज़ किया कि अब की गजवा में जो कनीज़ें आई हैं उनमें से एक दो हम को मिल जायें, आप ने फ़रमाया बदर के यतीम तुम से पहले दरख़्वास्त कर चुके। (अबूदाऊद)

एक दफा हजरत अली रज़ि०

ने किसी चीज की दरख़्वास्त की। फ़रमाया यह नहीं हो सकता कि मैं तुम को दूं और अहले सुफ़्फ़ा को इस हाल में छोड़ दूं कि वह भूख से अपने पेट लपेटे फिरें। (मुस्नद अहमद)

एक दफ़ा एक औरत ने एक चादर लाकर पेश की। आप को जरूरत थी। आप ने ले ली। एक साहब आये। उन्होंने कहा क्या अच्छी चादर है ? आपने उतार कर उनको दे दी। जब उठकर चले गये तो लोगों ने उनको मलामत की कि तुम जानते हो कि आप सल्ल० की चादर की जरूरत थी, यह भी जानते हो कि आप सल्ल० किसी का सवाल रद्द नहीं करते। उन्होंने कहा, हां ! लेकिन मैं ने तो बरकत के लिए ली है कि मुझको इसी चादर का कफन दिया जाये। (बुखारी)

जुहद व कनाअत (परहेजगारी और सन्तोष) के उनवान से जो घटनायें लिखी गयी हैं उनसे जाहिर होगा कि आप सल्ल० किस तंगदस्ती में बहसर फ़रमाते थे। सन् ३ हिज्री के बाद विजय का एक सिलसिला चला है। अरब में बागात सब से बेहतर जायदाद थी। सन् ३ हिज्री में बनू नुजैर के यहूदियों में से मुख़ीरीक़ नामी एक व्यक्ति ने अपने सात बाग आप सल्ल० को वसीयत कर दिये। आपने सब को खैरात कर दिया। यानी वह खुदा की राह में वक़्फ़ थे उनमें जो कुछ पैदा होता था वह दीन दुखियों को दे दिया जाता था।

एक सहाबी ने शादी की। वलीमा के लिए घर में कुछ न था। आप सल्ल० ने उनसे फ़रमाया कि आयशा के पास जाओ और आटे की टोकरी मांग लाओ। वह गये और जाकर ले आये। हालांकि आप सल्ल० के घर में उस ज़खीरा के अलावा शाम के खाने को कुछ न था। एक दफा एक ग़िफ़ारी आकर मेहमान हुआ। रात को खाने के लिए सिर्फ बकरी का दूध था, वह आप ने उसको नजर कर दिया। यह तमाम रात आप के घर में फ़ाक़ा से गुजरी और इससे पहली रात में भी यहां फ़ाक़ा ही था। (जारी)

प्रस्तुति तथा रूपान्तर : मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ २१ का शेष)

.....ख़ुदा फ़रामोशी की सज़ा ख़ुद फ़रामोशी है । ..... इसका इलाज खुदा को पहचानना, जानना, मानना और उसकी तलब है। उससे दूर भागने के बजाए उसकी तरफ आयें। नफरत के बजाए मुहब्बत, इन्कार के बजाए इकरार, बगावत के बजाए सुलह व आश्ती और सरकशी के बजाए अदब व आज्ञापालन की जरूरत है।"

हालात में तबदीली (परिवर्तन) लाने के लिए हमको अपने मौजूदा तरीक–ए–कार (कार्य पद्धति) में तब्दीली लाने की जरूरत है। हिम्मत और हौसिला से काम लेने की जरूरत है। ठोस प्लानिंग और सही इस्लामी स्प्रिट पैदा करने की जरूरत है। डरने और खौफजदा होने की जरूरत नही। दुश्मन साजिशें रचते हैं, मंसूबे बनाते हैं यह उनका काम है। मौलाना मुहम्मद वाजेह रशीद हसनी नदवी के शब्दों में –

"किसी आन्दोलन (तहरीक) की कामयाबी उसके तरीक–ए–कार, पालीसी, अज्म व इरादा, खुदऐतमादी (आत्मविश्वास) एहसासे खुदी (आत्मगौरव, गर्व), हकीकत शनासी (विवेक), और दुश्मन के इरादों व मन्सूबों की जानकारी पर निर्भर है। ..... हम प्रयास करें। हमारी कियादतें (लीडरशिप) एहसासे जिम्मेदारी और दीनी व मिल्ली तथा कौमी जज्बा (राष्ट्रीय भावना) से खाली न हों, भरपूर हों।

जो लोग अपने देश की शासन व्यवस्था के खिलाफ़ गुस्सा और नाराज़गी जताते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और उनको भी चाहिए कि वह समझदारी और हिकमत से काम लें और हुकमरां तब्क: (सत्ता) को सन्तुष्ट करने के लिए संजीदा तरीका अपनायें रद्दे अमल और तनकीद (आलोचना) का रास्ता छोड़कर दावत व इस्लाह (आवाहन व सुधार) और मुफाहमत (समझौता) का रास्ता अपनायें। क्योंकि टकराव के रास्ते ने उम्मत को बहुत नुकसान पहुंचाया है।"

(पृष्ठ १६ का शेष)

दी। इसी के साथ रोजाना साठ मिस्री रतल रोटी और नील के पानी के डोल दिए जाते।

शैख अहजर को उनके मासिक वेतन के अलावा उनके खच्चर के चारे तथा अन्य खर्चों के लिए भी एक रकम निर्धारित की गयी। मिस्र की इस्लामी युनिवर्सिटी जामिया अजहर की वक्त जायदाद में इसका उल्लेख मौजूद है। अन्त में सवारी के नाम से शैख अजहर को सौ पौंड मासिक मिलते। बाद में यह वेतन में शामिल कर लिया गया। अन्तिम जमाने में अध्यापकों के वेतन का नियमित रूप से व्यवस्था स्थापित हो गयी।

ग़ुरूरे बुश ने ललकारा है ईमानी हरारत को
हरारत ये करेगी ख़ाक अमरीकी जिहालत को
तक़ाज़ा है ये ईमां का उठें सब साहिबे ईमां
न रस्ता दें किसी जानिब सहयूनी शरारत को

अध्यापकों का चयन

पिछले लेखों में हमने मुसलमानों की तालीमी और इल्मी गतिविधियों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। इस्लामी जगत के विभिन्न क्षेत्रों में मदरसों और उच्च शैक्षिक संस्थानों की स्थापना और उनमें शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। अब अध्यापकों के चयन के तरीके और उनकी सेवाओं के कुछ उदाहरण देखिये।

सहाब–ए–किराम रज़ि० ने कुरआन पाक और हदीस नबवी की शिक्षा के लिए स्वयं ही दूर–दूर तक इस्लामी राज्य के शहरों व गावों में व्यवस्था स्थापित कर ली थी और अरब व गैर अरब जो भी नबवी ज्ञान का प्यासा होता उस व्यवस्था से लाभ उठाने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से आ जाता। मगर उनके बाद उमवी काल से जब मकतबों व मदरसों की स्थापना का चलन शुरू हुआ, तो कोई भी व्यक्ति उस समय तक शिक्षक के पद को अपना नहीं सकता था जब तक कि उसके उस्ताद उसे यह प्रमाणपत्र न दे दें कि उसकी शिक्षा पूरी हो गयी है।

प्रथम दौर में उस्ताद अपने शिष्य के स्तर से सन्तुष्ट हो जाने पर उसे अपनी किसी एक या कई विष्यों में अपनी कक्षा से अलग होने की अनुमति दे देता था। कभी उसके लिए स्वयं ही एक कक्षा बना देता था और अपने विद्यार्थियों को कोई विष्य या पाठ पढ़ाने की जिम्मेदारी उसको दे देता। यह क्रम चलता रहता। जब विद्यार्थी ज्ञान में निपुण हो जाता तो अपनी पाठशाला अलग स्थापित कर लेने की और कभी अपनी मौत के बाद अपनी जगह पर पठन पाठन का काम करते रहने की वसीयत कर देता था। बाद में सनद या डिग्री का चलन शुरू हुआ। अन्तिम दौर में दस्तार-बन्दी भी होने लगी। मदीना मुनव्वरा में हजरत रबीअ रहम० ने इमाम मालिक बिन अनस को अपनी कक्षाएं स्थापित करने की अनुमति दी। इमाम मालिक ने इमाम शाफओ को प्रमाणित किया कि वे दीनी कक्षा में पाठ पढ़ा सकते हैं। कूफा में हजरत हम्माद रहम० के उत्तराधिकारी इमाम अबू हनीफा रहम० हुये। यदि किसी ने इन तरीकों के अलावा या बिना अनुमति शिक्षण का काम करना चाहा तो उसे सचेत किया गया।

अब्बासी खलीफा हारून रशीद के चीफ जस्टिस अबू यूसुफ रह० के विषय में बताया जाता है कि काजी अबू यूसुफ रह० अपने उस्ताद इमाम अबू हनीफा रह० के जीवन में ही बीमार पड़ गये थे, बीमारी सख्त थी। इमाम अबू हनीफा उनको देखने के लिए आए। बातचीत के दौरान फरमाया– मुझे आशा थी कि मेरे बाद तुम मुसलमानों की बड़ी सेवा करोगे।

उस्ताद के इस वाक्य को काजी अबू यूसुफ ने अपने लिए सनद माना और स्वस्थ्य होने के बाद अपनी अलग कक्षा स्थापित कर ली। इमाम अबू हनीफा ने एक शिष्य के द्वारा काजी अबू यूसुफ रह० से पांच मसलों के जवाब मालूम किए। काजी अबू यूसुफ रह० की कक्षा में वापस आ गए। इमाम साहब ने उनसे कहा कि अभी तुम्हें बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। जिसने ज्ञान की प्राप्ति से मुंह मोड़ा या लापरवाही बरती उसे अपने आप पर आंसू बहाना चाहिए।

मदरसों की स्थापना का सिलसिला शुरू हो जाने के बाद, मदरसे का प्रधानाचार्य शिक्षा की समाप्ति पर सनद देने लगे जो वर्तमान काल के सर्टिफिकेट या डिग्री जैसी थी। मेडिकल स्कूलों में भी यही रिवाज शुरू हुआ। कोई भी उस समय तक अपना अलग दवाखाना शुरू नहीं कर सकता था, जब तक कि वह किसी प्रतिष्ठित हकीम या किसी तिब्बीया कालिज से लिखित प्रमाण पत्र प्राप्त न कर लें।

इस्लामी शासन के पूर्वी व पश्चिमी भागों में अध्यापकों का बड़ा मान सम्मान था और उनका एक विशेष वेष भूषा होती और अलग पहचान होती। उस लिबास को दूसरे व्यवसाय का कोई आदमी नहीं अपना सकता था। बनू उमय्या के जमाने में उलमा की एक विशेष पहचान कपड़ों के ऊपर उनके चोगे से होती थी जिसे पहनकर वे निकला करते थे। अब्बासी दौर में काजी अबू यूसुफ रह० के मश्वरे से उलमा के लिए काला अमामा (पगड़ी) और कबा का चयन किया गया। फातिमा

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

जमाने में हरा अमामा और सुनहरा लिबास होता जो छः टुकड़ों पर आधारित होता था। कभी कभी अमामा नहीं भी होता था। जब पूरब के प्रसिद्ध इमाम शैख अबू अली काली उन्दलिस पहुंचे तो उनके सरपर भारी भरकम पगड़ी देख कर लोग चकित रह गए। उन्दलिस के उलमा ही का लिबास यूरोप के शिक्षित वर्ग ने अपनाया और आज भी यूरोप की यूनिवर्सिटियों में डिग्री समारोह में वैसा ही लम्बा कोट पहना जाता है जिसे गाउन कहते हैं (यही रिवाज उन देशों में भी है जो बाद में यूरोपीय शिक्षण व्यवस्था से प्रभावित हुए, जैसे भारत व पाकिस्तान–स०म०अ०)

भारत औरपाक उपमहाद्वीप के देशों में और पूरबी क्षेत्र के अन्य मुस्लिम देशों में उलमा और विद्वानों का लिबास आम लोगों से थोड़ा भिन्न रहा है। अब्बासी दौर के अन्त में उलमा का एक बोर्ड बन गया था, जो अध्यापकों व शिक्षकों का चयन करता था। यदि बोर्ड के सदस्यों में मतभेद होता तो सुलतान फैसला करता था। अबू शामा ने अपनी पुस्तक अर–रौजतैन में मुकल्लिद दोली के हवाले से उद्धर्त किया है कि जब हाफिज मुरादी का देहान्त हुआ, तो उलमा में उनके उत्तराधिकारी के प्रश्न पर मतभेद हो गया। कुछ विद्वानों ने फिक्ह व मसाइल की शिक्षा के लिए शैख शर्फुद्दीन बिन अबी उसरोन को बुलाना चाहा और जब कि कुछ लोगों का मत था कि विवादास्पद और युद्ध सम्बन्धी विषयों में शैख कुतुबद्दीन नीशापुरी अधिक दक्षता रखते हैं, अतः उनका चयन कर लिया जाए। यह मतभेद और तनाव इतना बढ़ गया कि झगड़े का खतरा पैदा हो गया और सुलतान नूरूद्दीन जंगी को इसकी सूचना दी गयी। सुलतान ने शैख मुजद्दुदीन बिन दायां को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा कि दोनों ग्रुपों में समझौता करा के इस विवाद को समाप्त कराएं। शैख मुजद्दुदीन ने इन लोगों से कहा कि हमने तो यह मदरसे ज्ञान के प्रचार व प्रसार और बिदअत व बिगाड़ को खत्म करने के लिए स्थापित किए हैं, आपने जो कुछ किया है, वह बिल्कुल अनुचित है और आपकी शान के योग्य नहीं है। सुलतान नूरूद्दीन जंगी ने मुझे आदेश दिया है कि मैं दोनों जमाअतों को राजी करूं और दोनों ओर के विद्वानों को सेवा करने का अवसर उपलब्ध कराऊं। अतएव शर्फुद्दीन को एक मदरसे के प्रधान अध्यापक का पद दिया गया जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुआ और शैख कुतबुद्दीन को मदरसा नफरी का जिम्मेदार नियुक्त किया।

इस्लाम के आरंभिक काल में और उसके बाद काफी समय तक अध्यापक और विद्वान अपनी सेवा के लिए वेतन आदि नहीं लिया करते थे। क्योंकि शिक्षण, प्रशिक्षण और अध्यापन का कोइ बदल सम्भव नही है। कुछ विद्वान ऐसे भी थे जो छात्रों और शिष्यों के खाने पीनी की भी स्वयं जिम्मेदारी लेते थे। छात्रों के लिए सारी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था अध्यापक ही करते थे। वे अपने और छात्रों के खाने पीने और आवास के लिए कोई कारोबार, उद्योग या अन्य काम करते थे और उसी की आय से जीवन यापन करते थे।

जब मदरसों की संख्या बढ़ी और शिक्षा एवं अध्यापन में विकास हुआ और इन मदरसों के लिए जायदादें और जागीरें वक्फ की गयीं, तब अध्यापकों के लिए मासिक वेतन निर्धारित किया जाने लगा। इस बारे में निजामुल मुल्क तूसी के साथ एक दिलचस्प घटना घटी। जब निजामुल मुल्क तूसी ने पूरे मुस्लिम राज्य में अपने मदरसे स्थापित किय और अध्यापकों का वेतन निर्धारित किया तो मावराउन्नहर (इराक) के उलमा ने एक सभा आयोजित की, ताकि निजामुल मुल्क के इस नए फैसले पर सोग मनाएं।

उन लोगों का तर्क था कि निजामुल मुल्क ने अपने इस नए फैसले से ज्ञान एवं विद्या की बरकत खत्म करदी है। अब ज्ञान उठा लिया जाएगा। ज्ञान का महत्व और उसकी महत्ता भी समाप्त हो जाएगी। उन्होंने कहा कि अब तक साहसी, उत्साही, अत्यन्त योग्य, सम्मानित व प्रतिष्ठित लोग ही शिक्षक का कर्तव्य निभाते थे। अब हर प्रकार के योग्य व अयोग्य लोग वेतन के लालच में शैक्षिक व्यवसाय को अपनाने लगेंगे, जिससे इस व्यवसाय की प्रतिष्ठा जाती रहेगी। लेकिन जमाने की रफतार और सामाजिक परिस्थितियों के कारण में यह दृष्टिकोण प्रभावी न रह सका। अतः मदरसा और उसकी जरूरतें, अध्यापक और उनके हालात में कमी बेशी भी होती रही।

सुल्तान सलाहुद्दीन ने अपने मदरसा सलाहिया में पढ़ाने के लिए जब शैख नजमुद्दीन को नियुक्त किया तो उनका वेतन चालीस दीनार निर्धारित किया और वक्फ की निगरानी उनके हवाले करके १० दीनार की वृद्धि और

(शेष पृष्ठ १७ पर)

विश्वास के विभिन्न तरीके

एम०एस० बहराइची

एक मनुष्य केवल सृष्टिकर्ता (ईश्वर) जो निराकार है उसी की इबादत और बन्दगी करता है। उसी से मदद मांगता है। अपने दुख सुख में उसी से विनती करता है और हर विपत्ति में उसी को पुकारता है। उसी के आगे सर नवाता है। इस पहले मनुष्य की इबादत के स्थान विशेष कर मस्जिदें हैं। परन्तु जब यह सफर और यात्रा में होता है तो रेलवे स्टेशन, हवाई जहाज आदि अनेक स्थानों पर भी ईश्वर की बन्दगी संदेष्टा के बताये तरीके पर करता दिखाई देता है।

दूसरा मनुष्य भी ईश्वर को मानता है और पहले मनुष्य की तरह मस्जिद में ईश्वर की बन्दगी और इबादत भी कभी–कभी कर लेता है परन्तु मनोकामनाएं एवं मुरादों के पूरा होने में कब्र व समाधि के भी चक्कर लगाता है। हार फूल चढ़ाता है एवं मस्तिष्क को कब्र व समाधि पर नवाता है। और समझता है कि ईश्वर की खुदाई में यह भी साझी और शरीक हैं या उन्हें ईश्वर के समक्ष सिफारिश करने का अधिकार प्राप्त हैं।

तीसरा मनुष्य भी ईश्वर में विश्वास करता है। परन्तु इस तीसरे मनुष्य की कई श्रेणियां हैं और सबसे विश्वास एवं पूजा के अलग–अलग तरीके हैं। परन्तु सभी का वर्णन करना असम्भव है। इसलिए हम केवल इस तीसरे मनुष्य की एक श्रेणी का ही वर्णन करेंगे जो हमें प्रत्यक्ष मन्दिरों में दिखाई पड़ता है। यह सृष्टिकर्ता के बजाए (सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, मूर्ति पत्थर, देवी, देवता आदि) की पूजा करता है इसकी पूजा के ढंग एवं तरीके में कोई समानता नहीं है मार्गचलते कब्र समाधि मन्दिर आदि पड़ने पर हाथ जोड़ना एवं गर्दन झुकाना इसके कर्तव्य में है।

ईश्वरीय विश्वास के यह तीन तरीके हमें प्रत्यक्ष दिखाई पड़ते हैं परन्तु जो दिख पड़ रहा है उसी पर यदि हम गम्भीरता पूर्वक विचार करें और सोचें कि क्या ईश्वरीय विश्वास के ये तीनों तरीके सही हैं? .... यदि सही हैं तो रात और दिन, रोशनी और अंधकार, ज्ञान और अज्ञान में भी फिर कोई अन्तर नहीं है। परन्तु आप इसे मानने के लिए तैयार न होंगे। इस लिए कि मानव बुद्धि दोनों के अन्तर से परिचित है और यह बात तो सभी जानते हैं कि सत्य केवल एक हो सकता है। असत्य बहुत हो सकते हैं।

एक भ्रांति : जो लोग यह कहते हैं कि ईश्वर तक पहुंचने के जो भी तरीके और विश्वास दुन्या में प्रचलित हैं या जितने भी धर्म संसार में फैले हुए हैं वे सभी सही और सच्चे हैं। यह बात ऊपर से तो भली मालूम होती है। परन्तु हैं ज्ञान और बुद्धि के विपरीत। जिस ईश्वर ने दुन्या के सारे इंसानों के लिए चाहे वह निर्धन हो या धनवान, ज्ञानी हो अज्ञानी, देहाती हो या शहरी, देशी हों या विदेशी काले हों या गोरे, शिक्षित हों या अशिक्षित। सबके लिए सूरज एक, चान्द एक, फलने फूलने, उगने बढ़ने जीवन मृत्यु, गरज़ सृष्टि का नियम सबके लिए एक बनाया। तो फिर धर्म अनेक कैसे हो सकते हैं? ... और न किसी प्रकार यह बात बुद्धि में आती है कि ईश्वर ने मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए बहुत से ऐसे धर्म भेजे हों जो परस्पर भिन्न और एक दूसरे के विपरीत हों। यह बात ईश्वर की तत्व दर्शिता उसके न्याय और उसकी दयालुता सबके विरुद्ध हैं इस लिए यह कहना किसी तरह उचित नहीं है कि सारे धर्म ईश्वर की ओर जाते हैं। रास्ते अलग–अलग हैं मंजिल एक है। धर्म एवं सत्यता का रास्त ईश्वर की मान्यता एवं मरजी से जुड़ है सरकार द्वारा किसी संस्था को मान्यता देने और न देने के महत्व को आप भी भली प्रकार समझते हैं परन्तु ईश्वर की मान्यता सरकार जैसी नही है उसका नियम और कानून अटल और अटूट है।

आदि पुरुष आदम का सनातन धर्म (इस्लाम)

जो ईश्वर मनुष्य को पैदा करने वाला है वही पथ प्रदर्शन करने वाला भी है। जब ईश्वर ने सृष्टि रची तो सबसे पहले इंसान हजरत आदम (अलै०) और सब से पहली स्त्री हजरत हव्वा को दुन्या में भेजा। दुन्या में जितने भी इंसान पैदा हुए। वे सब एक पिता आदम (अलै०) और माता हव्वा की सन्तान हैं। तमाम कौमों की धार्मिक और ऐतिहासिक रिवायतें (साक्ष्य) इस मसले में एक हैं कि इंसान की नस्ल की शुरूआत एक ही जोड़े से सांइसी तहकीकात और अधिकांश वैज्ञानिक भी इसी बात को मानते हैं। इसी लिए

(शेष पृष्ठ २६ पर)

नई चुनौतियां

मुहम्मद हसन अंसारी

आज कल दुनिया में भौतिकवाद (माद्दीयत) का बोलबाला है, और दहशतगर्दी व दादागीरी का बाजार गर्म है। संचार माध्यम (मीडिया) इन से सम्बन्धित खबरों से भरे पड़े हैं, अगर यह खबरें पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, समाचार बुलेटिन्स, टीवी चैनल्स से निकाल दी जायें तो इनका पेटा और पेट भरना मुश्किल हो जाये । इन हालात का सबसे अधिक असर इस्लाम और मुसलमानों पर पड़ा है और पड़ रहा है। इस्लामी दुनिया के लिए आज यह नई चुनौतियां हैं जो इस से पहले इस रूप में नहीं रहीं। इन चुनौतियों का सामना कैसे किया जाये, अपने वजूद (अस्तित्व), अपने कलचर, अपनी जबान (भाषा) आपनी पहचान और इन्सानी कदरों (मानव–मूल्यों) की रक्षा, सुरक्षा और संरक्षण का सवाल है जो विचारकों और दानिशवरों (बुद्धिजीवियों) के जेहनों को उनके मन–मस्तिष्क को परेशान किये हुए हैं।

इस्लाम की बुनियाद तौहीद पर कायम है और अकीद–ए–तौहीद में इन्सानी जिन्दगी के हजार मसाइल (समस्याओं) का हल मौजूद है, मगर शर्त यह है कि वह खालिस हो, उस में कोई मिलावट न हो। उस्ताद हदीस एडीटर अल–रायद नदवतुल उलमा मौलाना अब्दुल्ला हसनी नदवी के शब्दों में –

"अल्लाह तआला जो इस कायनात (सृष्टि) और इसके कण–कण का खालिक व मालिक है, और तमाम आसमानों का पैदा करने वाला है, बनाने वाला है और चलाने वाला है, एक ऐसी हस्ती है जो अपनी जात, सिफात (गुण) और कर्म में (अफआल) एकता व तन्हा है जिस पर कोई उसका शरीक व सहीम (हिस्सेदार) नहीं। उसने तन्हा सब को पैदा किया और सब कुछ बनाया और अकेला ही चला रहा है। उस की कुदरत में किसी का कोई दखल नहीं। हर चीज उसकी मर्जी और इरादा से जुड़ी है, न कोई टोक सकता है न कोई रोक सकता है। मलाइका (फरिश्ते), अम्बिया, औलिया सब उसके बन्दे हैं। इन में से किसी की उस के साथ कोई शिर्कत (साझेदारी) नहीं। हर एक उसका मुहताज है और वह किसी का मुहताज नहीं। खुलासा यह है कि अकीद–ए–तौहीद एक ऐसा बुनियादी, जरूरी और नागुजीर (अपरिहार्य) अकीदा है जिसके बगैर कायनात की सही चूल नहीं बैठ सकती।

जानने वाले जानते हैं कि हर वह चीज जो चमकती है सोना नहीं होती लुभावनी हो सकती है। लेकिन आज कुछ एक को छोड़कर, लोग विवेकहीन होकर, हर उस चीज की ओर खिंचे जा रहे हैं जो चमकदार हो जिसमें चकाचौंध हो नयापन हो, बनावटी पन हो– बात चाहे कपड़ों की हो, खाने की हो, उठने बैठने की हो या बात करने की हो। मानव विकास के मान्यतायें रही हैं जो आधुनिकता की आंधी में तेजी के साथ विलुप्त (गायब) होती जा रही हैं और उनकी अनदेखी करना एक फैशन बन गया है। यह बड़े खतरे की बात है।

मौलाना अली मियां के शब्दों में, "मनुष्य का अपनी जात के मामलों में तनमयता, अपनी जात में मगन रहना व राहत के साधन शायद कभी इतने ईजाद न हुए हों जितने इस दौर में। स्वयं को पूजने की फिलास्फी शायद किसी युग में ऐसी न सजाई गई हो जैसी इस जमाने में। अपने अलावा हर चीज के इन्कार का रूजहान शायद कभी इतना आम न हुआ हो जितना इस मौजूदा सोसाइटी में। लेकिन सच्चाई और दिन–रात का अनुभव क्या है? क्या यह नहीं कि इन्सान अपने अन्जाम से सब से अधिक निश्चिंत है? अपनी जात से सब से अधिक बेपरवाह है? लज्जत व राहत की हकीकत से सबसे अधिक महरूम (वंचित) है? जीवन के ढेर में उसका अपना हिस्सा सबसे जियादा कम है, वह रूपया ढालने की मशीन बन कर रह गया है जो अपने ढाले हुए सिक्कों से स्वयं फायदा नहीं उठा सकती। उसका हिस्सा जिन्दगी में सिर्फ इतना है कि उसको इतना तेल दिया जाता रहे जिससे वह चलती रहे। जजबात व एहसासात से महरूम, सुख–दुख से महरूम, खुशी और गम से बेखबर एक मशीन है, वह एक ऐसा सवार है जो सवारी के काबू में है। सवारी उसके काबू में नहीं। ..... खुदा को याद करने के बजाए उसको भुला देने वाले काम बढ़ते जा रहे हैं। .....

(शेष पृष्ठ १७ पर)

सभ्यता की अश्लीलता

(तहज़ीब की उर्यानियत)

डा. मसऊद आलम क़ासिमी

एक ऐसे जमाने में जहां बाजारों से लेकर दफतरों, कलबों, और मनोरंजन स्थलों (तफरीहगाहों) में और तमाशगाहों से लेकर खेल के मैदान तक में औरत की सुन्दरता की नुमाइश को सभ्यता, कलचर और उन्नति की पहचान समझा जाता है और एक ऐसे समाज में जहां मर्द तो सिर से पांव तक लिबास (वस्त्र) में ढका रहता हो और उस पर कोट और टाई का प्रयोग करता हो औरत के लिए लगभग नंगे लिबास को श्रृंगार (बनाव सिंगार) समझा जाता हो किसी औरत को यह सलाह देना कि उसका बेहतरीन स्थान उस का घर है यकीनन रूढ़वादी, लकीर का फकीर और पिछड़ापन की बात समझी जाएगी और तअज्जुब नहीं कि इसे मुसलमानों के रूढ़वादी विचार धारा समझकर अस्वीकार कर दिया जाए।

मगर यह सलाह किसी मोलवी, पण्डित और प्राचीन विचारों के किसी आचरण सुधारक (मुअल्लिमे अख़लाक़) की नहीं बल्कि उस पश्चिमी दुन्या की मशहूर फिल्मी अदाकारा कीट हडसन की है। फिल्मी दुन्या में अदाकारी और जिस्म की नुमाइश का एक लम्बा कैरियर निभाने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंची।

" I think the greatest thing when you are a fimale who is laways out and about ..... is to remember that your place is the home
(Hindustan Timses, Delhi -23-07-2004)

"मेरा ख्याल है कि सबसे बड़ी चीज एक ऐसी औरत के लिए जो हमेशा बाहर फिरती है, उसे याद रखना चाहिए कि उसका बेहतरीन स्थान उसका घर है।"

ब्रिटेन में दिये गये अपने एक इंटरव्यू में उन्होंने औरतों को सलाह देने के साथ अपनी इस इच्छा और इरादा को भी जाहिर किया कि वह कर्तव्य निभाने वाली पत्नी और कृपालु (मुश्फिक) मां बनकर जीवन बिताना चाहती है।

सिनेमा जैसी आकर्षक और चमक दमक की दुन्या की किसी अदाकार की यह इच्छा कि वह कर्तव्य पालन करने वाली पत्नी और कृपालु मां बनना चाहती है और औरतों की यह सलाह देती है कि वह शम–ए–महफिल (Society Girl) बनने के बजाए धर की शोभा बनने की कोशिश करें, मीडिया और पश्चिमी विचारधारा को चुनौती देना है। मीडिया ने किया भी यही हडसन का इंटर्व्यू प्रकाशित करने के साथ उसपर रूढ़वादी विचार की फबती कसी।

नाच गाने, विलास्ता, शराब और शबाब की हंगामी दुन्या में जब तक औरत फंसी रहती है उस समय तक उसको अपनी हैसियत का ख़्याल नहीं आता अपनी पवित्रता की क़द्र व क़ीमत का अन्दाज़ा नहीं होता और न अपने जीवन के उद्देश्यों की पवित्रता का एहसास होता है मगर जब उस की निसवानियत (स्त्रीत्व) जागती है तो वह अपनी हक़ीक़ते ज़िन्दगी की तरफ़ लौटना चाहती है। उसके अन्दर कर्तव्य पालन और खान्दानी ज़िन्दगी जीने की तमन्ना पैदा होती है।

यह केवल फिल्मी दुन्या का ही हाल नहीं है। मुलाजमतों और समाजी व फौजी सेवाओं तक में औरत से उसकी निस्वानियत छीन कर उसपर उर्यानियत (नग्नता) थोप दी गयी है और घरेलू जिन्दगी की ज़िम्मेदारी से हटाकर बेराहरवी (पथभ्रष्टता) की आदत लगा दी गयी है। एक समय तक तो नई दुन्या के लाभ प्राप्त करने के शौक में अपनी जिन्दगी का आनन्द उठाती है परन्तु जब उस को दुर्घटनाओं तथा यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है तो उसका दृष्टिकोण भी हडसन की तरह हक़ीक़त पसन्दीदा हो जाती है।

औरतों को आज़ादी और बराबरी के नाम पर घर से बाहर निकाल कर बाजार बल्कि जंग के मैदान में लाने में यूरोप के साथ अमेरिका का बड़ा रोल है। अमेरिकी फौज में दो लाख से अधिक औरतें शामिल हैं। फौजी जिन्दगी में उनका क्या हाल होता है इसका अन्दाजा एक फौजी महिला मारयान बड्डा की जीवन कथा से लगाया जा सकता है।

"पहले जब मैं अमेरिकी झण्डे पर नजर डालती थी तो यह मुझे सुर्ख, सफ़ेद और नीला दिखाई देता था, मगर अब मैं इस पर सिर्फ खून के धब्बे देखती हूं। सुर्ख रंग उस खून का चिन्ह है जो मेरे बदन से बहा, नीला रंग उन

चोटों की नुमाइन्दगी करता है जो मेरे शरीर ने सहीं और सफेद रंग मेरे भयभीत चेहरे का है। मैं अपने देश के लिए मारी पीटी गई और मेरी इज्जत लूटी गई इससे अधिक और क्या हो सकता है।"

मारिया बड्डा की यह दुःख भरी कहानी स्त्री स्वतंत्रता की सभ्यता पर एक बदनुमा दाग़ है परन्तु यह अनोखी घटना नहीं है। अमेरिका लोवास्टी में पूर्व फौजियों की मेडिकल रिपोर्ट से पता चलता है कि जिन ५५८ महिलाओं का इंटरव्यू लिया गया उनमें से २८ फीसद ने बताया कि फौजी सेवा में उनकी मर्यादा भंग की गयी या उसकी कोशिश क़ी गई।

हमारे स्कूल कालेजों जहां लड़के लड़कियां साथ पढ़ती हैं वहां का हाल बताने की जरूरत नहीं है। रोज आप अप्रिय घटनाओं को समाचार पत्रों में पढ़ते हैं। अब तो अध्यापन जैसे पवित्र पेशे पर भी आरोप लगाने लगे हैं।

शिक्षा संस्थानों का माहौल उन को वास्तविक जीवन से जिस तरह दूर करता है और रोमान भरी जिन्दगी जिस तरह दाखिल करता है उस का सीधा प्रभाव यह होता है कि देश में दुराचार, क़त्ल, गारतगरी, बदकारी आम होती जा रही है और शान्ति व्यवस्था कायम रखने की समस्या पैदा हो गई है और पुलिस अधिकारियों को कहना पड़ता है कि "यदि लड़कियों का लिबास ठीक कर दिया जाए तो अमन व शान्ति व्यवस्था के बिगाड़ में कमी आ सकती है।"

अमली ज़िन्दगी में इस तालीम व तहजीब का प्रभाव क्या है उसका एक विवरण अंग्रेज़ी के समाचार पत्र "हिन्दुस्तान टाइम्स दिल्ली दिनांक ६ मई २००४ में देखा जा सकता है। मार्केट एजेंसी सरवे की रिपोर्ट २००४ के अनुसार दिल्ली के खुशहाल खान्दानों से सम्बन्ध रखने वाली २५ से ३५ वर्ष की ५०३ महिलाओं के इंटर्व्यू से जिस बेबाकी का प्रदर्शन होता है उस से पता चलता है कि उन्होंने किस तरह कर्तव्य पालन करने वाली बीवी और कृपालु मां के आचरण को ठुकरा कर बाहर की चमक दमक को जिन्दगी का उद्देश्य समझ लिया है। इस संदर्भ में हडसन की सलाह जब मेरी नजर से गुजरी तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे कुर्आन की रोशनी उसके दिल में उतर गई हो जो मुहम्मद (सल्ल०) अरबी पर नाजिल (औतरित) हुई थी।

अनुवाद – "उन औरतों से कहो कि तुम अपने घरों में (प्रतिष्ठा) से रहो और साबिक (पूर्व) जमान–ए–जाहिलियत (अज्ञानतेके युग) की सजधज न दिखाती फिरो।"

इंसानों को पैदा करने वाले पवित्र पालन हार ने इंसान की नागरिक पवित्रता और आपस में मिल जुल कर रहने की पाकीज़गीं का जो इंतिजाम किया है उसमें मर्द और औरत के कार्य क्षेत्र के निर्धारण का बड़ा महत्व है। औरतें अगर घर की जिम्मेदारी निभाएं बीवी का आचरण और मां की महानता को महसूस करें तो मर्दों को बाहर की दुन्या के संवारने तथा तरक़्क़ी के इंतिजाम के लिए शांतचित और आज़ाद कर सकती हैं। मगर जब वह अपनी जिम्मेदारियों से लापरवाह होकर सजधज कर बाहर निकलती हैं तो रचना (तअमीर) का काम रूकता है। बरबादी का अमल शुरू होता है और समाज में बुराइयों का जहर दाखिल होता है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद रज़ि० की रिवायत (कथन) के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया "औरत छुपाने योग्य है जब वह बाहर निकलती है तो शैतान उसको घूरता है और जब वह अपने घर में होती है तो अल्लाह की रहमत से करीब होती है।"

औरत की जीविका, खाना, कपड़ो उसकी जाइज़ जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी मर्दों पर है। इसलिए उसे रोजी रोटी के लिए भटकने की जरूरत नही है और अगर पालन पोषण का साधन प्राप्त न हो तो ज़रूरत पूरी करने के लिए बाहर निकल सकती है। मगर जरूरत के लिए बाहर जाने फैशन के लिए बाहर निकलने में बड़ा अंतर है। एक जगह ज़रूरत को पूरा करना और दूसरी जगह हवस की तस्कीन है। एक जगह जिम्मेदारी का एहसास है, दूसरी जगह जिम्देारी से पलायन है। इस प्रकार जिम्मेदारों और महरम (जिसके साथ निकाह हराम है) के साथ बाहर निकलने और आशना के साथ बाहर निकलने के मतलब में बड़ा अंतर है।

इसलाम ने जरूरत के समय महिलाओं को फौजी सेवा से भी रोका नहीं है मगर उन पर रक्षा और युद्ध करने की ज़िम्मेदारी नहीं डाली है। यह ज़िम्मेदारी मर्दों को सौंपी है। मर्दों को अगर अपने घर की तरफ से इत्मीनान हासिल हो जाए तो वह फौजी सेवा अच्छी तरह अंजाम दे सकते हैं। हज़रत अनस (रज़ि०) की रिवायत है कि एक औरत ने रसूलुल्लहा सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि सारी बड़ाई मर्दों को हासिल है। मर्द जिहाद करते हैं और बड़े बड़े काम अंजाम देते हैं हमें भी मौका दीजिए कि हमें जिहाद करने वालों के बराबर सवाब मिल सके तो आप (सल्ल०) फरमाया तुम को घर बैठे मुजाहिदीन के बराबर सवाब मिलेगा।

वह समाज जो औरतों को घर की सुख शान्ति, और खानदान की मान मर्यादा देता हो और उनको घर बैठे फौजी खिदमत अंजाम देने वाले के बराबर बदला और सम्मान का हकदार समझता हो, उसकी महानता को वह समाज कहां पा सकता है जो औरतों को घरों से निकाल कर मैंदान में लाता हो और उसके हुस्न की नुमाइश करता हो।

अनुवाद– हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ २६ का शेष)

उस औरत की नमाज़ की इमामत की नीयत कर ले तो उसकी नमाज़ तो हो जाएगी लेकिन उसके दाएं बाएं और पीछे वाले तीन मर्दों की नमाज़ न होगी और अगर वह मर्दों की नमाज़ पढ़ाएगी तो किसी भी मर्द की नमाज़ न होगी। शरीअ़त का हुक्म इसी तरह है और यह इसलिए नहीं कि औरत बड़ी ख़राब चीज़ है बल्कि इसलिए कि शरीअ़त का यही हुक्म है और ग़ौर करें तो इसमें बहुत सी मस्लहतें समझ में आएंगी उनमें से एक यही कि औरत की कशिश अल्लहा की तरफ़ की जाने वाली तवज्जुह को अपनी तरफ़ खींचेगी फिर मस्लहत हमारी समझ में आए न आए शरीअ़त अल्लाह की उतारी हुई है उसमें चूं चरा की गुंजाइश नहीं।

(पृष्ठ २७ का शेष)

हक में मुबारक नही देखा, उनकी वजह से बनू मुस्तलिक के सैकड़ों घराने आजाद कर दिये गये।

हजरत जुवैरिया (रज़ि०) का नाम बर्रह था, ऑहजरत (सल्ल०) ने बदल कर जुवैरिया रखा, क्योंकि उसमें बदफाली थी।

हजरत जुवैरिया (रज़ि०) ने रबीउल अव्वल सन ५० हिजरी में वफात पाई, उस समय उनकी उम्र ६५ साल की थी, मरवान ने नमाजे जनाजा पढ़ी और जन्नतुल बकीअ में दफन हुई।

आंहजरत (सल्ल०) से कुछ हदीसें रिवायत कीं, उनसे इन बुजुर्गों ने हदीस सुनी है, इब्ने अब्बास जाबिर, इब्ने उमर, उबैद बिन अस्बाक तुफैल, अबू अय्यूब मरागी, कुलसूम, इब्ने मुस्तलिक, अब्दुल्लाह बिन शद्दाद बिन अलहाद करीब (रज़ि०)।

एक बार जुमे के दिन हजरत मुहम्मद सल्ल० उनके घर तशरीफ लाए तो आप रोजे से थीं हजरत जुवैरिया (रज़ि०) से पूछा कि कल रोजे से थीं? बोलीं, "नहीं" फरमाया, तो कल रखोगी?" जवाब दिया "नहीं" इरशाद हुआ तो फिर तुम इफतार कर लो। (बुखारी)

दूसरी रिवायत में है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम हर महीना में तीन दिन रोजः रखते थे इन तीन दिनों में एक दिन जुमा का जरूर होता।

आंहजरत सल्ल० को उनसे महब्बत थी और उनके घर आते जाते थे, एक बार आ कर पूछा कुछ खाने को है? जवाब मिला मेरी कनीज (नौकरानी) ने सदकः का गोश्त दिया था वही रखा है, उसके सिवा और कुछ नही। फरमाया, उसे उठा लाओ, "क्योंकि सदकः जिसको दिया गया था उसको पहुंच चुका। (मुस्लिम भाग १ पेज ४००)

हम आप के सुझाओं का स्वागत करते हैं। धार्मिक लेख तो आ़लिम लोग लिख रहे हैं ग़ैर आ़लिम लेखकों से अनुरोध है कि वह जीवन में काम आने वाले ज्ञानात्मक लाभप्रद लेख लिखें।

–धन्यवाद

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

शैतान जिन्न से बचने की तदबीरें

अबू मर्गूब

शैतान से महफ़ूज़ रहने के लिए अऊ़ज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ना चाहिए। उसमान बिन अबिलआ़स ने जब नमाज़ ख़राब करने की शिकायत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से की तो आपने नमाज़ ही की हालत में अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ने और थुकथुकाने का हुक्म फ़रमाया। ऐसा लगता है कि मुत्तकी परहेज़गार के थुकथुकाने से भी वह भागता है –

शरीअ़त की पाबन्दी करने वाला ख़ुदा का ख़ास बन्दा है उस पर भी शैतान का क़ाबू नहीं चलता। सूर–ए–हिज्र आयत ४० में शैतान ने ख़ुद एअ़लान कर दिया कि मैं तेरे मुख़्लिस बन्दों को छोड़ कर बाक़ी लोगों को बहकाऊंगा और इसी सूरत की बयालिस्वीं आयत में अल्लाह तआ़ला ने एअ़लाम फ़रमा दिया कि मेरे खास बन्दों पर तेरा क़ाबू ही न चल सकेगा। पस शैतान से बचने के लिए खुदा का जिक्र करते रहना चाहिए और तक़वे वाली संयमी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहिए।

आयतुलकुर्सी के विर्द से भी शैतान भागता हैं और ह़दीस से साबित है कि सुब्ह़ व शाम आयतुल कुर्सी पढ़ने वाला शैतान से मह़फ़ूज़ कर दिया जाता है। फ़र्ज़ नमाज़ों के बा़द आयतुल कुर्सी पढ़ना चाहिए कि मुस्तह़ब का सवाब भी मिलता है और शयातीन से हिफ़ाज़त का फ़ाइदा भी।

पस शैतान के शर से मह़फ़ूज़ (सुरक्षित) रहने के लिए ईमान पर जमा रहे, अल्लाह से डरे, अल्लाह पर भरोसा करे, ईमान के तक़ाज़े पूरे करे, नमाज़ों का इहतिमाम करे, शरीअ़त की पाबन्दी करे क़ुर्आने शरीफ़ की तिलावत पाबन्दी से करे, अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करे, हर नमाज़ के बा़द आयतुल कुर्सी पढ़े, ख़ास तौर से फ़ज्र और इशा की नमाज़ के बाद, अल्लाह तआ़ला से दुआ़ भी मांगता रहे और जब भी शैतान का एह़सास हो अऊ़ज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़ लिया करे।

जो शख़्स फ़राइज़ व वाजिबात को छोड़ने वाला हो, रोज़ा, नमाज़ से बे परवाह हो वह ता़वीज़ लटकाने से कुछ पढ़कर फूंक मारने से शैतान के शर से मह़फ़ूज़ नहीं रह सकता, हो सकता है ख़ुश एअ़तिकादी से दुन्या का फ़ाइदा नज़र आने लगे लेकिन आख़िरत तो बरबाद हो ही रही है।

तौबा व इस्तिग़फ़ार में देर न करें

बा़ज़ लोगों को शैतान बहका कर गुनाह पर गुनाह करवाता रहता है यहां तक कि वह कहने लगते हैं कि ज़िन्दगी भर तो ऐसे रहे अब तौबा से क्या फ़ाइदा। बा़ज़ दूसरे लोग ऐसों पर तंज़ करते हुए एक बेहूदा कहावत भी सुना देते हैं कि "सत्तर चूहे खा के बिल्ली चली हज को" अस्तग़फ़िरूल्लाह ऐसे लोगों को सूर–ए–ज़ुमर की दो आयतों ५३, ५४ का अनुवाद पेश करता हू, अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से फ़रमाता है – कह दीजिए : ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने गुनाह करके अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है तुम अल्लाह की रह़मत से मायूस (निराश) मत हो, अल्लहा तो तुम्हारे पिछले सारे गुनाह ज़रूर मुआ़फ़ कर देगा बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला (क्षमावान) बड़ा रही़म (दयावान) है और तुम अपने रब की तरफ़ लौटो और तौबा करो इससे पहले कि तुम पर अ़ज़ाब का फ़ैसला आजाए फिर कोई तुम्हारी मदद न करे।

मुस्नद इमाम अह़मद बिन ह़ंबल की जिल्द ३ पृष्ठ २६ पर एक ह़दीस दर्ज है जिस का मफ़हूम यूं है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहिव सल्लम ने इत्तिलाअ़ दी कि शैतान ने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि जब तक इन्सान की रूह़ उस के बदन में रहेगी उस को बहकाना न छोडूंगा, अल्लाह तआ़ला ने भी अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम खा कर फ़रमाया जब तक मेरे बन्दे तौबा करते रहेंगे मैं उनको बख़्शता रहूंगा। पस क्या इस के बाद भी तौबा में देर करने की गुंजाइश है?

तौबा की शराइत :

१. जिस बुराई से तौबा कर रहे हैं उस बुराई पर नादिम होना।

२. जिस बुरे काम से तौबा कर रहे हैं उसे तुरन्त छोड़ देना।

३. जिस बुरे काम से तौबा कर रहे हैं आइन्दा (भविष्य में) उससे दूर रहने का पक्का इरादा कर लेना।

यह तीनों शर्तें पूरी कर के अल्लाह तआला से तौबा करें मुआफी (क्षमा) मांगें तौबा कबूल होगी। अगर तौबा टूट जाए तो तुरन्त तीनों शर्तों के साथ फिर तौबा करें। अल्लाह तआला तव्वाब है रहीम है। अगर किसी का हक मारा है तो हक की अदायगी या मुआफी भी जरूरी है।

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : सूर–ए–नूर में है कि जब तुम किसी घर में दाख़िल हो तो घर वालों पर सलाम कर के दाख़िल हुआ करो। सुवाल यह है कि अगर घर में कोई मौजूद न हो घर में ताला लगा हो और हम ही ताला खोल कर दाख़िल हों तब भी सलाम कर के दाख़िल हों? और क्या दुकान का भी यही हुक्म है ?

उत्तर : जिस घर में दाख़िल होना चाहते हैं और वह घर अपना नही है, दूसरे का है तो घर वालों से इजाज़त भी लें और सलाम भी करें फिर इजाज़त हो तो दाख़िल हों इजाज़त न मिले तो बुरा माने बिना वापस आ जाएं। अपना घर हो तब भी घर वालों को सलाम कर के दाख़िल हों। दुकान में भी दाख़िल हों तो जो दुकान में मौजूद हैं उनको सलाम करके दाख़िल हों। घर हो या दुकान अगर उसमें कोई मौजूद नहीं है तो सलाम करने की ज़रूरत नहीं है, बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाख़िल हो जाएं।

प्रश्न : शरीअ़त में अज़ान का क्या हुक्म है?

उत्तर : हर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए मर्दों पर अज़ान कहना सुन्नते मुअक्किदा है चाहे जमाअ़त से नमाज़ पढ़ें या अकेले, लेकिन मस्जिद में हर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए एक बार अज़ान सिर्फ़ सुन्नते मुअक्किदा ही नहीं शिआ़रे इस्लाम (इस्लाम का चिन्ह) है। इस के छोड़ने पर मुसलमानों को किसी तरह राज़ी न होना चाहिए और सख़्त नकीर करना चाहिए और अज़ान ज़रूर कहना या कहलवाना चाहिए। अलबत्ता मुसाफ़िर लोग अपनी नमाज़ अलग पढ़ते हैं तो अगर किसी ऐसी मस्जिद में पढ़ते हैं जहां अज़ान हो चुकी है तो वह अज़ान न कहेंगे लेकिन मस्जिद के सिवा कहीं और पढ़ते हैं तो वह अज़ान कह सकते हैं लेकिन उनके लिए सुन्नते मुअक्किदा नहीं है। इसी तरह जो शख़्स किसी उज़्र से तन्हा अपने घर में पढ़े या जमाअ़त से पढ़े और महल्ले की मस्जिद में अज़ान हो चुकी हो तो वही अज़ान उसके लिए काफी है अलबत्ता अगर ऐसी जगह घर हो कि वहां मस्जिद ही नहीं है तो वहां अज़ान कहना सुन्नते मुअक्किदा है।

प्रश्न : फ़र्ज़ नमाज़ के अ़लावा क्या किसी और मौकिअ़ पर भी अज़ान कही जाती है?

उत्तर : इस का जवाब मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूकी लखनवी (रह०) की किताब इल्मुलफ़िक़्ह से नक़्ल करते हैं : जब बच्चा या बच्ची पैदा हो तो जब उसे नहला धुला कर साफ़ कर लें तो उसके दाहने कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कहना मुस्तहब है। इसी तरह जो किसी रंज में मुब्तला हो या उसे मिर्गी का मरज़ हो या ग़ुस्से की हालत में हो, या जिस की आ़दतें ख़राब हो गई हों इन्सान हो या जानवर, लड़ाई के वक़्त, जले हुए के कान में, उस मुसाफ़िर के लिए भी अज़ान मुस्तहब है जो रास्ता भूल गया हो और कोई रास्ता बताने वाला न हो, जहां जिन्न वग़ैरह ज़ाहिर होते हों या किसी को तकलीफ़ पहुंचाते हों तो वहां भी अज़ान कहना मुस्तहब है।

प्रश्न : क्या मुर्दे को दफ़न करने के बाद क़ब्र पर अज़ान कहना मुस्तहब है?

उत्तर : नहीं यह मुस्तहब नहीं है बल्कि बिदअ़त है जहां इस का रवाज हो ख़त्म करना चाहिए। अगर दफ़न के बाद क़ब्र पर अज़ान मुस्तहब होती तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस में या सहाब–ए–किराम के अ़मल में इस का सुबूत ज़रूर होता। चारों इमामों के यहां भी इस का ज़िक्र नहीं है। हज़रत बड़े पीर साहब की किताब गुनयतुत्तालिबीन और उनके वअ़ज़ों में भी इसका जिक्र नहीं है इस लिए इससे बचना ज़रूरी है अल्बत्ता घर वालों को दफ़न के बाद कुछ देर वहां रूक कर मग़्फ़िरत की दुआ करना चाहिए उस दुआ से मैयत को फ़ाइदा पहुंच सकता है।

प्रश्न : क्या औ़रत मर्द की नमाज़ की इमामत कर सकती है?

उत्तर : नहीं औ़रत मर्द की इमामत नहीं कर सकती न बालिग़ की न नाबालिग़ की, वह मुख़न्नस (हिजड़े) की नमाज़ की भी इमामत नहीं कर सकती, वह सिर्फ़ औ़रतों की इमामत कर सकती है। जमाअ़त की नमाज़ में औ़रतों की जगह बच्चों के भी पीछे है। औ़रत अगर जमाअ़त की नमाज़ में मर्दों के बीच में खड़ी हो जाए तो उसकी नमाज़ ही न होगी और अगर इमाम

(शेष पृष्ठ २४ पर)

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत जुवैरिया (रज़ि०)

सादिका तस्नीम फारूकी

नाम जुवैरिया, क़बील–ए–खुजाआ के खानदान मुस्तकिल से हैं।

हारिस बिन अबी जुरारा हजरत जुवैरिया रजि० के बाप खानदाने बनू मुस्तलिक के सरदार थे। हजरत जुवैरिया (रज़ि०) का पहला निकाह अपने ही कबीले में मुसाफिअ़ बिन सफवान से हुआ था।

हजरत जुवैरिया रज़ि० के बाप और पति मुसाफिअ़ दोनों इस्लाम के दुश्मन थे, अतः हारिस ने कुरैश के इशारे से या खुद मदीना पर हमला की तैयारियां शुरू की थीं, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खबर मिली तो आपने सहाबा को तैयारी का हुक्म दिया, दो शअबान सन ५ हिजरी को फौजें मदीना से रवाना हुईं और मुरैसीअ़ में जो मदीना मुनव्वरा से नौ मंजिल है, पहुंच कर कियाम किया, लेकिन हारिस को यह खबरें पहले से पहुंच चुकी थीं, इसलिए उसकी फौज बिखर गयी और वह खुद भी किसी ओर निकल गया लेकिन मुरैसीअ़ में जो लोग आबाद थे, उन्होंने सफ आराई की और देर तक जम कर तीर बरसाते रहे, मुसलमानों ने एक साथ हमला किया तो उनके पैर उखड़ गये, ग्यारह आदमी मारे गये और बाकी गिरफ्तार हो गये, जिनकी तादाद तकरीबन ६ सौ थी, गनीमत मे दो हजार ऊंट और पांच हजार बकरियां हाथ आयीं।

लड़ाई में जो लोग गिरफतार हुए उनमें हजरत जुवैरिया (रज़ि०) भी थीं, इब्ने इस्हाक की रिवायत है जो बाज हदीस की किताबों में भी है कि तमाम असीराने जंग लौंडी गुलाम बनाकर बांट दिये गये, हजरत जुवैरिया (रज़ि०) साबित बिन कैस के हिस्सों में आयीं, उन्होंने साबित से दरख्वास्त की कि मुझ से कुछ लेकर छोड़ दो साबित ने नौ ओकिया सोने पर मान लिया, हजरत जुवैरिया (रज़ि०) के पास रूपया न था चाहा कि लोगों से रूपया मांग कर रकम अदा करें, आंन हज़रत सल्ल० के पास भी आयीं और आप सल्ल० से माली मदद चाही ताकि उसकी अदाएगी से आजादी हासिल कर सके, आप सल्ल० ने फरमाया क्या तुम को उससे बेहतर चीज की ख्वाहिश नहीं? उन्होंने कहा, वह क्या चीज हैं? आप ने फरमाया, तुम्हारी ओर से मैं रूपया अदा कर देता हूं और तुमसे निकाह करलेता हूं। हजरत जुवैरिया (रज़ि०) राजी हो गयीं आपने अकेले वह रकम अदा कर दी और उनसे शादी कर ली।

हजरत जुवैरिया (रज़ि०) का बाप हारिस अरब का रईस था।

हजरत जुवैरिया (रज़ि०) जब गिरफतार हुईं तो हारिस जो जंग के वक्त भागने में कामयाब हो गया था आंहज़रत सल्ल० की खिदमत में आया साथ में बहुत से ऊंट भी लाया और कहा कि मेरी बेटी नौकरानी नहीं बन सकती, मेरी शान इससे ऊंची है, मैं अपने कबीले का सरदार और अरब के रईसों में से हूं। आप मुझसे यह ऊंट ले लीजिए और मेरी बेटी को आजाद कर दीजिए। आपने फरमाया क्या यह अच्छा न होकि खुद जुवैरिया (रज़ि०) की मरजी पर छोड़ दिया जाए, हारिस ने जा कर जुवैरिया (रज़ि०) से कहा, मुहम्मद (सल्ल०) ने तेरी मरजी पर रखा है देखना तू मुझ को जलील न करना, उन्होंने कहा, मैं रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में रहना पसन्द करती हूं। यहीं यह वाकिआ भी लिखा है कि हारिस जब ऊंट लेकर आ रहा था तो रास्ते में उसने दो ऊंट छुपा दिये थे जिन्हें कोइ और न जानता था, जब उसने ऊंट पेश किये तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा और वह दो ऊंट कहां है। यह सुनना था कि हारिस ईमान ले आये।

हजरत जवैरिया (रजि०) से जब आपने निकाह किया तो तमाम असीराने जंग जो फौजियों के हिस्से में आ गये थे लगभग सब छोड़ दिये गये, फौजियों ने कहा, जिस खानदान में रसूलुल्लाह सल्ल० ने शादी कर ली वह गुलाम नहीं रह सकता।

हजरल आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि मैंने किसी औरत को जुवैरिया (रज़ि०) से बढ़ कर अपनी कौम के

(शेष पृष्ठ २४ पर)

एक धमाका खेज़ नाविल "शेफर्ड डाउन्सी"

जिसने ईसाइयत की बुन्यादें हिला कर रख दीं

मो० मेराज खां, गाजीपूरी

१८ मार्च २००५ को बीबीसी ने दो पहर के बुलेटिन में एक खबर नश्र (प्रसार) की, डान ब्राउन की नाविलों के कारण जनसाधारण के सामने बेटकिन सिटी की हैसियत मशकूक (संदिग्ध) और ग़ैर मोतबर (अविश्वस्त) हो गई हैं, ख़ासतौर पर उसकी तख़लीक़ (रचना) शेफर्ड डाउन्सी ने बेटिकन सिटी की मज़हबी और सियासी (धार्मिक और राजनीतिक) हैसियत को हिलाकर रख दिया है जिसकी बुन्याद ही मनगढ़न्त विचारों और बेबुन्याद परम्पराओं पर पड़ी है और उस नाविल ने बहुत से ऐसे राज़ों (रहस्य) पर से परदा उठाया है जिसकी परदा पोशी के लिए बेटिकन सिटी ने हमेशा भरपूर कोशिश की है।

पाठकों को मालूम होगा कि दुन्या का सबसे बड़ा मसीही मजहब "कैथोलिक" कहलाता है जिसका सम्बन्ध रोमन कैथोलिक चर्च से है, इस कलीसा का अन्तर राष्ट्रीय केन्द्र इटली के मशहूर शहर वेटिकन सिटी में है चूंकि इस कलीसा का संचालक इसी शहर में रहता है इसलिए इस मुक़ाम को खुद मुख्तार रियासत (निरंकुश स्टेट) का दर्जा हासिल है।

आइये देखें कि इस नाविल में ऐसी क्या बातें हैं जिसने वेटिकन सिटी की बुन्याद को हिलाकर रख दिया है जोकि फ्रांस और बरतानिया समेत कई देशों में चर्चा का विषय बना हुआ है वास्तव में नाविल लिखने वाला एक अंग्रेज़ डान ब्राउन ने बड़ी मेहनत और रिसर्च, छानबीन के बाद ऐतिहासिक हवालों और दलीलों से यह बात साबित की है कि मौजूदा (वर्तमान) ईसाइयत बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) की एक नई शक्ल है और यह कि ईसाइयत ख़ालिस (निर्मल) रब्बानी दीन (ईश्वरीय धर्म) के ऐतिबार से हजरत ईसा (अलैहि०) की वफ़ात के बाद से ही पूरी तरह तहरीफ़ (रद्दोबदल) का शिकार हो गई है। इसके अलावा उसने यह भी लिखा है कि कलीसा की तारीख फरेब देही (छल व्यवहार) और तशद्दुद (अत्याचार) से भरी पड़ी है।(शेफर्ड डाउन्सी १२८वां अध्याय)

नाविल लेखक ने अपनी नई पुस्तक "शेफर्ड डाउन्सी" के ५५वें अध्याय में खासतौर पर ईसाइयत पर चोट की है जिसके लिए उसने विशेषकर तीन चीजों को चर्चा का विषय बनाया है।

प्रथम यह कि वर्तमान मसीहियत बुत परस्ती (मूर्तिपूजा) रूमी सम्राट किसतिनतीन की कारीगरी का नतीजा (परिणाम) है जो कि २५८ से ३३७ ई० तक रूम का शासक रहा, उसने चाहा कि दुन्या के अकसर हिस्से पर उसकी हुकूमत स्थापित हो जाए, अपनी इसी देरीना (पुरानी) खुवाहिश को पूरा करने के लिए उसने ईसाई मजहब से कुरबत बढ़ानी शुरू की और फिर अपनी बुत परस्ताना अलामतें (चिन्ह) उनमें दाखिल करना शुरू कर दीं, चुनांचि उसने सनीचर को यौमे मुकद्दस (पवित्र दिन) का दर्जा दे दिया, और यह बात खुली हुई है कि इतवार को सण्डे कहते हैं और इस दिन को बुत परस्त रूम वाले मुकद्दस (पवित्र) ही नहीं बल्कि खुदा भी मानते हैं, इसी तरह हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) का अपने बेटे हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) को दूध पिलाने का वाक़िआ उनकी देवी 'ईनर्स' की एक नकल की हुई एक शक्ल है जिसमें वह अपने बच्चे "होर्स" को दूध पिलाती हैं।

दूसरे, विषय के तौर पर नाविल लेखक ने इनजीलों को लेते हुए उसकी सच्चाई और अस्लियत (वास्तविकता) पर चर्चा की है और साबित (सिद्ध) किया है कि मोजूदा इनजील वह इनजील नही है जिसे अल्लाह तआला ने हजरत ईसा पर नाज़िल किया था बल्कि रूमी बादशाह किसतिनतीन "मेकिया फेलली" ने बाज़ मज़हबी लोगों की मदद से क़िब्ती डाकूमेन्ट को शामिल करते हुए अपने विचारों के प्रचार के लिये एक नई इनजील की रचना की जो आज मसीही दुन्या में राएज है जिसमें हजरत मसीह (अ०) को खुदा का दर्जा दिया गया है।

तीसरे और अन्तिम विषय पर विवाद करते हुए डान ब्राउन ने ज़ोर देकर इसका इन्किशाफ (प्रकटन) किया है कि वह इनजीलें जो उस वक्त दस्तयाब (उपलब्ध) थीं और जिनमें हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को बशर और नबी कह गया था, रूम के बादशाह ने उन्हें जलाने का आर्डर दे दिया था और उनके प्रयोग करने पर जला कर

मार डालने की सज़ा नियुक्त की गयी थी, इसके साथ ही ऐसी इनजील के लिखवाने और छपवाने में लग गया जिसमें हजरत ईसा अलैहिस्सलाम को खुदा के बेटे की हैसियत से पेश किया गया था।

क़ाबिले ग़ौर बात यह है कि डान ब्राउन ने सिर्फ पुराने कलीसाई व्यवस्था की ही आलोचा नहीं की बल्कि मौजूदा कलीसा की कार्य पद्धति पर भी उंगली उठाई है, इस सिलसिले में एक वाक़िआ नक़ल करते हुए उसने लिखा है कि किस तरह भूतपूर्व पोप ने अपने एक अधीन संस्था को अलग करने से पहले २०० लाख यूरो की नक़दी पेश की थी। जिसकी पोप के साथ चपक़लिश (असमंजस) चल रही थी।

बहरहाल इन वाकिआत से एक बात तो साबित हो जाती है कि वर्तमान ईसायत का अपने मूल स्रोत से दूर का भी संबंध नहीं है और उसकी जगह बुतपरस्ती,पापाइयत और ग़ुलू (हद से आगे बढ़ जाना) ने लेली है।

जिस की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) कुरआन पाक ने बहुत पहले ही कर दी थी।

अनुवाद : ऐ किताब वालो मत मुबालग़ा (बात बढ़ा चढ़ा कर कहना) करो अपने दीन की बात में और मत कहो अल्लाह की शान में मगर पक्की बात, बेशक मसीह जो है ईसा, मरयम का बेटा वह रसूल है अल्लाह का, और उसका कलाम है जिसको डाला मरयम की तरफ और रूह है उसके यहां की, सो मानो अल्लाह को और उसके रसूलों को और न कहो कि खुदा तीन हैं, इस बात को छोड़ो बेहतर होगा तुम्हारे वास्ते। (सूरतुन्निसा – १७१)

(बजरये गुलोबल फीचर्स नदवा)

(पृष्ठ १० का शेष)

तंगी के वक्त में आपकी पैरवी की। करीब था कि उनमें से एक जमाअत के दिल फिर जाएंगे। फिर वह उन पर मेहरबान हुआ, बेशक वह मेहरबान है रहमवाला है। और तीन शख्सों पर जो पीछे रह गये यहां तक कि जमीन बावजूद वुस्अत के उन पर तंग हो गयी और उन पर उनका नफ्स तंग हो गया और उन्होंने जान लिया कि नहीं पनाह मगर अल्लाह की तरफ। फिर वह उनकी तरफ मुतवज्जह हुआ ताकि वह तौबा करें, बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला, रहमत वाला है। ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो।

वल्लाह इस्लाम के बाद सबसे बड़ा इनआम खुदा तआला ने मुझ पर यह किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रूबरू मुझे हक बात कहला दी। अगर मैं झूठ बोलता तो मेरा भी वही हश्र होता जो झूठ बोलने वालों का हुआ। अल्लाह तआला ने झूठों के हक में बहुत ही सख्त वअ़ीद फरमायी।

अन्करीब वह तुमसे अल्लाह की कसमें खायेंगे जब तक तुम उनकी तरफ पलटोगे ताकि उनको दरगुजर करो। पस तुम उनसे एराज करो, बेशक वह नापाक हैं। उनका ठिकाना दोजख है, उनका बदलः है जो उन्होंने कमाया। कसमें खायेंगे, तुम्हारे सामने ताकि तुम राजी हो। अगर तुम राजी हुए तो अल्लाह फासिक लोगों से राजी नहीं होता।

हजरत कअब कहते हैं कि पीछे कर दिये जाने का मतलब यह है कि हमारा मुआमला कुछ दिनों के लिए उठा रखा था उन लोगों की निस्बत जिनको जाहिरी हाल पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इक्तिफा की जब उनहोंने कसम खाई तो उनसे बैअत ली और उनके लिए बख्शिश चाही और हमारे काम को मुअख्खर कर दिया यहां तक कि अल्लाह तआला इसमें फैस्ला करे। (बुखारी मुस्लिम)

(पृष्ठ २० का शेष)

दुन्या के सारे इंसानों में भाई चारे का रिश्ता है। ईश्वर ने जब आदम (अलै०) को दुन्या में भेजा तो उन्हें जीवन गुजारने का एक तरीका भी बताया और कहा कि यही तरीक़ा अपनी संतान को भी बतायें। जीवन गुजारने के इस तरीके का नाम इस्लाम था। इस्लाम इंसान का सबसे पहला धर्म है जिसका अर्थ है। आज्ञा पालन स्वीकार कर लेना, अपने आपको ईश्वर के आगे समर्पित कर देना। और यह मान लेना कि तमाम दुन्या का खुदा (ईश्वर) एक है। उसी की बन्दगी (इबादत, पूजा) करो। उसीके आगे सिर झुकाओ। उसी से मदद मांगो और उसकी मरजी एवं इच्छा के मुताबिक दुन्या में नेकी और इंसाफ का जीवन व्यतीत करो। इस्लाम नाम है इसी धर्म का और इसी तरीके पर जीवन गुजारने का जो ईश्वर के संदेष्टा ईश्वर की तरफ से लाये थे। इस्लाम किसी कौम और जाति बिरादरी की मिल्कियत नहीं है। और न यह किसी जाति बिरादरी का नाम है कि इसमें पैदा होने वाला हर आदमी आप से आप इस्लाम वाला हो। और इस्लाम वाला बनने के लिए उसको कुछ करना न पड़े। जिन लोगों ने संदेष्टाओ की बातों को माना और उस पर चलते रहे। वह इस्लाम वाले एवं मुसलमान कहलायें। चाहे वह किसी युग और काल में क्यों न हों। और जो लोग संदेष्टाओं के मार्ग से हट गये। चाहे संदेष्टा की स्वयं की अपनी संतान ही क्यों न हो वह काफिर एवं मुशरिक कहलायें। इस कुफ्र का असल अर्थ छुपाने और परदा डालने के हैं। ऐसे मनुष्य को काफिर इस लिए कहा जाता है कि उसने अपनी फितरत (प्रकृति) पर नादानी एवं ना समझी का परदा डाल रखा है। जबकि वह इस्लाम की फितरत पर पैदा हुआ उसका सारा शरीर और शरीर का हर भाग इस्लाम के कानून फितरत पर काम कर रहा है सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र सभी उसी कायदे कानून से बंधे हैं। मुशरिक का अर्थ है ईश्वर की खुदाई में दूसरों को साझीदार बनाना शरीक करना।(जारी)

छटीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़माना

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

खिलाफ़ते राशिदा

हजरत अबूबक्र (रजि०) को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद सहाब (रजि०) ने अपना सरदार बनाया।

उस समय देश की अज़ब हालत थी। एक तरफ अरब के क़बीले इस्लाम से फिर गये और मुसीलमा और असबद आदि ने पैगम्बरी का दावा कर दिया। जो इस्लाम पर कायम रहे उनमें से भी एक बड़ी संख्या ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। बाहर से हमले का भी हर समय डर था। हज़रत अबू बक्र (रजि०) ने हालात को अच्छी तरह से देखा और पूरे ग़ौर के बाद एक आखिरी राय क़ायम कर ली। आप ने सबसे पहले हज़रत उसामा (रजि०) को आदेश दिया कि शाम की तरफ़ रवाना हो जाएं।

सहाबा (रजि०) ने बहुत मना किया कि मुल्क की हालत खराब है, इस वक्त बाहर फौज भेजना किसी तरह उचित नहीं लेकिन हज़रत अबू बक्र (रजि०) हालात को समझ चुके थे। इसलिये अपनी राय पर जमे रहे। और हजरत उसामा (रजि०) को रवाना कर दिया जो चन्द ही दिनों में दुश्मनों को पराजित करके माल से लदे फंदे वापिस आए।

हज़रत खालिद (रजि०) मसीलमा बगैरह के मुकाबले पर भेजे गए और उन्हें हुक्म दिया गया कि जकात ने देने वालों से भी जंग की जाए। सहाबा (रजि०) ने अब भी रोकना चाहा लेकिन हज़रत अबू बक्र (रजि०) खुद तलवार लेकर खड़े हो गए और कहने लगे कि खुदा की क़सम अगर ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक रस्सी भी देते थे और अब उससे इन्कार करते हैं तो उन से जंग करूंगा। आप के इस इरादे को सुनकर सब चुप हो गए। और फौजें रवाना हो गईं।

इस में कोई शक नहीं कि हज़रत अबू बक्र (रजि०) मामले को बिल्कुल समझ गये थे। उनकी इस नीति से सारा देश थर्रा उठा और सब के दिल में यह बात बैठ गई कि मुसलमान बड़े मज़बूत और ताक़तवर हैं। अगर उनके पास काफी ताकत न होती तो इस तरह चारों तरफ फौजें न रवाना करते। नतीजा यह हुआ कि दुश्मनों के छक्के छूट गये और बिन लड़े भिड़े हजारों लाखो आदमी ताबेदार (अधीन) हो गये। जो मुकाबले पर आए, वह भी इस तरह लरज़ते कांपते हुए कि चंद ही लड़ाईयों में हथियार डाल दिये। मसीलमा और उस के साथी मारे गये और मुल्क भर में चारों तरफ इस्लाम का डंका बजने लगा।

रूम व ईरान

रूमी और ईरानी दोनों हमेशा अरबों को ज़िल्लत की निगाह से देखते थे और उन्हें अपना गुलाम समझते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुसरो परवेज़ (ईरान के बादशाह) को इस्लाम की दावत दी तो उस ने यह कहकर पवित्र पत्र (आप का पत्र) को फाड़ डाला कि उफ मेरे गुलाम की यह मजाल कि मुझे इस तरह पत्र लिखे। इसके बाद यमन के गवर्नर को आदेश भेजा गया कि आप को बन्दी बनाकर भेज दे। रूमियों के बारे में मालूम था कि बहुत समय से अरब पर हमलों का इरादा रखते थे।

यह तो अरब के साथ उन का व्यवहार था। खुद अपने देश में प्रजा पर जो जुल्म व अत्याचार ढा रहे थे, उसके बयान करने से आज भी बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उनके अत्याचार से खुद उन की प्रजा परेशान थी। सहसा ईरान में बड़ी गड़बड़ मच गई। यहां के हालात देखकर अरब और ईरान की सीमा के उन कबीलों ने जिन पर ईरानी हमेशा जुल्म करते चले आ रहे थे, ईरान की सरहद पर हमला करना शुरू कर दिया और हजरत अबू बक्र (रजि०) से आकर कहा कि हम लोगों को मुसीबत से बचाने का यही वक्त है। आप अरबों के साथ ईरानियों की दुश्मनी से अच्छी तरह अवगत थे। मुसलमानों को ईरानियों की दुश्मनी से बचाने के अतिरिक्त एक उद्देश्य यह भी था कि उन के कानों तक खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया जाए। इसलिए आप तैयार हो गये और हज़रत खालिद (रजि०) की कमान में एक फौज ईरान की तरफ भेजी गई जिसने चन्द ही लड़ाइयों में ईरान का बड़ा हिस्सा फतह कर लिया।

यरमूक

ईरानियों की तरह यरमूक भी मुसलमानों के बड़े दुश्मन थे और बहुत

दिनों से अरब पर अपना कब्जा जमाने की फिक्र में थे। एक आध बार उन्हों ने मदीना शरीफ पर भी हमला करने का इरादा किया था। इसलिए हजरत अबू बक्र (रजि०) ने इरान के साथ शाम पर भी फौज कशी की थी और हजरत अबू उबैदा (रजि०) बिन ऊजराह बिन सुफयान, उमर बिन आस (रजि०) और बड़े बड़े सहाबा को फौजें देकर शाम भेजा था और वह भी ठीक उस समय जब ईरान में लड़ाई हो रही थी। जंग छिंड़ी हुई थी और रूमी बड़े विशाल लशकर के साथ मुकाबला कर रहे थे। इसलिए यहां हजरत खालिद (रजि०) की जो बड़े नामवर थे और ईराक में थे, सख्त जरूरत थी। इसलिए हजरत अबू बक्र (रजि०) ने उन्हें आदेश भेजा कि वह तुरंत वहां जाए और अपनी जगह पर हजरत मुसन्ना (रजि०) को मोकर्रर कर जाएं। यह आदेश मिलते ही हजरत खालिद रजि अल्लाह अनहा शाम रवाना हो गये। और यहां आकर इस्लामी फौज के सरदारों से मिल गये।

पहला मारका अजनादीन के स्थान पर हुआ रूमियों की बड़ी प्राजय हुई। अब शाम के हाकिम हरक्ल को सख्त ताव आया और उसने तीन लाख फौज मुकाबले के लिए भेजी। मुसलमानों की तादाद किसी तरह चालीस हजार से अधिक न थी। यरमूक के स्थान पर दोनों फौजों का मुकाबला हुआ। रूमी बड़े साहस और बहादुरी से लड़े लेकिन प्राजय हुई और लाखों लाशें छोड़कर मैदान से भाग गए।

इस लड़ाई ने उनकी हिम्मत तोड़ दी और उन्हें साफ नजर आने लगा कि चन्द ही दिनों मे सारा शाम हाथ से निकल जाएगा।

हजरत अबू बक्र का देहान्त

यरमूक की लड़ाई जारी थी जमादिउस्मानी १३ हिजरी में हजरत अबू बक्र रजि अल्लाह अनहा का इंतिक़ाल हो गया मदीना के दूत (कासिद) ने मैदाने यरमूक में आकर आपके देहान्त की सूचना दी।

आप ने कुल दो वर्ष तीन माह दस दिन हुकूमत की लेकिन इतनी कम मुद्दत में जितने बड़े बड़े काम आप ने किये वह दूसरों से बर्सहा बर्स में मुश्किल हो सकते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंख बन्द होते ही नबूवत के झूठे दावेदार और मुर्तिदों (इस्लाम से फिर जाने वालों) ने इस्लाम का चिराग बुझा देना चाहा, लेकिन हज़रत अबू बक्र (रजि०) ने निहायत तत्पर्ता से इन फितनों (फसादों) को तहस नहस कर दिया। आप तबीयत के नर्म लेकिन इरादे के पक्के थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद जिन कबीलों ने ज़कात देने से इन्कार किया था, सहाबा उनके मुकाबले में तलवार उठाने के मुखालिफ थे लेकिन हजरत अबू बक्र रजि० ने कहा कि यह नहीं हो सकता जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में बकरी का एक बच्चा भी देता था, उससे तलवार के द्वारा वसूल करूंगा। अल्लाह और रसूल के साथ बड़ी गहरी मुहब्बत थी। हर समय जान व माल से हाज़िर रहते। कभी सख्त से सख्त मौके पर भी आप के क़दम पीछे नहीं हटते। ख़िलाफ़त से पहले कपड़े का कारोबार करते थे लेकिन ख़लीफ़ा होने के बाद काम इतना बढ़ा कि इसके लिए समय न निकल सका। मजबूरन सबके कहने से अपने गुजारे के लिए बैतुलमाल (सरकारी खजाने) से कुछ वेतन लेने लगे। लेकिन वफात (देहान्त) के समय वसीयत कर दी कि उनकी जाइदाद बेच कर यह रकम सरकारी खजाने में वापस कर दी जाए।

हजरत अबू बक्र ने अपने ज़माने में इसका बड़ा लिहाज़ रखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में जो बाते न होती थीं, उन्हें न होने दिया। इसलिए आप की ख़िलाफ़त ने बाकाइदा हुकूमत का रूप इख्तियार न किया, न कोई इमारत बनवाई, न खजाना कायम किया न फौज का बाकइदा कोई विभाग क़ायम किया। जो रूपया आता था, मुसलमानों में दे लेकर चुका देते थे, और बैतुलमाल में झाड़ू फिरा देते थे। जब जिहाद के लिए फौज की जरूरत होती थी, तो मुसलमानों को जमा करते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में जो व्यवस्था थी ठीक उसी तरह उस को कायम रखा। यहां तक कि अधिकारियों में भी कोई परिवर्तन नहीं किया। आप का सबसे बड़ा कारनाम़ा कुर्आने को जमा करना है। इसी लिए कुर्आन मजीद उस जमाने में चमड़े के टुकड़ों पर, ऊंट की हड्डियों, और खजूर की पत्तियों पर लिखा हुआ था और वह भी किसी एक आदमी के पास पूरा कुर्आन न था किसी एक के पास कोई सूरः थी, किसी एक के पास कोइ आयत थी, किसी के पास कोई टुकड़ा था। हजरत उमर ने राय दी कि पूरे कुर्आन को एक जगह जमा कर लिया जाए ताकि आइन्दा नष्ट न हो जाए। चूंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में यह न हुआ था, इसलिए हजरत अबू बक्र को संकोच हुआ लेकिन फिर हजरत उमर रजि० के इसरार (अनुरोध) से इसकी मसलहत कुछ समझ में आ गई

→

कुदरत का बेहतरीन तुहफा

आम

इदारा

भारत और पाकिस्तान का मशहूर फल है, यह तुखमी और कल्मी दो किस्म का होता है कच्चे आम को जब तक उसमें गुठली नहीं पैदा होती "कैरी" कहते हैं, कच्चे आम का मजा खट्टा होता है, और पक्के आम का मीठा और मजेदार, बाज आम खट मीठे भी होते हैं, पके हुए तुखमी आम का रस चूसा जाता है और कलमी आम को काटकर खाया जाता है यह तुखमी की निसबत देर में हज्म होता है।

पक्का आम चाहे तुखमी हो या कलमी, बदन को ताकत देता है और परवरिश करता है और कब्ज को दूर करता है, इसके बराबर इस्तेमाल से बदन ताक़तवर और मोटा हो जाता है। रिसर्च के अनुसार आम में विटामिन सी अधिक मात्रा में पाया जाता है और इसमें कुछ विटामिन 'ए' भी होता है, इन गिज़ाई जौहरों की वजह से आम बदन की परवरिश ख़ासकर बच्चों की बढ़ोतरी के लिए बहुत ही लाभदायक है। आम को नहार मुंह खाना मुनासिब नहीं, खाना खाने के बाद या तीसरे पहर खाए, आम खाने के बाद दूध पी लेने से इसके फाइदे बढ़ जाते हैं, अगर आम खाने के बाद कुछ जामुनें खा लीजिए तो आम जल्द हज़्म हो जाता है।

कच्चा आम लुओं से बचाता है, कच्चा आम लेकर भूबुल में दबा दें, जब वह पक जाए तो निकाल लें और राख से साफ करके उसका गूदा पानी में हल करें और शकर या मिसरी से मीठा करके पिलाएं अगर मिल सके तो उसमें थोड़ा से अर्क किवड़ा भी मिलाएं ज़ियादा मुफ़ीद हो जाएगा।

आम की गुठली कब्ज़ करती है, खासकर पुरानी गुठली ज़ियादा काबिज होती है इसको बारीक पीस छान कर तीन, तीन माशे ताज़ा पानी के साथ खाने से दस्त रूक जाते हैं, इसके अलावा अगर हैज (मासिक धर्म) जियादा जारी हो या खूनी बवासीर की जियादती से दिन बदिन कमज़ोरी बढ़ती जाती हो तो उसके खिलाने से वह भी रूक जाता है। शूगर में पेशाब की जियादती भी उसके इस्तेमाल से कम हो जाती है। आम के पेड़ की छाल भी काबिज है दस्तों को रोकती और खूनको बन्द करती है, माहवारी खून बहुत जियादा जारी हो, खूनी बवासीर जारी हो सैलानुर्रहम (सफेदी जाना) की शिकायत हो या दस्त और पेचिस हो इन सब हालतों में आम की छाल पानी में जोश देकर ठण्डा करके पिलाने से फाइदा होता है, दस्तों में आम की छाल को दही में पीस कर पेट पर लेप लगाने से भी फाइदा होता है। आम के पेड़ की अन्दर की छाल एक दो तोला लेकर रात को तीन छटांक पानी में भिगो रखें सुबह को छान कर पियें, एक हफते के इस्तेमाल से सूजाक की तकलीफ जाती रहती है।

आम का फूल जिस को बौर भी कहते हैं मर्दों के जिरयान और औरतों के सैलान में मुफीद है, इसको साए में खुश्क करके कूट छान कर बराबर वजन शकर मिला कर सात सात माशे दूध या पानी के साथ खाया जाता है।

आम की कोपलें पानी में पीस छान कर पिलाने से दस्तों को रोक देती हैं दस्तों में खून जाता हो या बवासीरी खून जारी हो या पेशाब के साथ खून आता हो वह भी उसके पिलाने से बन्द हो जाता है।

आमचूरः – कच्चे आमों को छील कर उनका गूदा उतार कर सुखा लेते हैं यही आमचूर है जो चटनी बनाने और दाल सालन को लज़ीज़ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, अगर जिस्म पर मकड़ी मली जाए तो आमचूर को पानी में पीसकर लेप करने से आराम हो जाता है, आम का अचार और मुरब्बा बनता है जो बहुत ही खुश ज़ाएक़ा और हाज़िम होता है, अचार के तेल लगाने से सर का गंजापन अच्छा हो जाता है, आम का मुरब्बा बदन को ताकत देता है। ●●●

→ और आप ने उन सहाबा (रजि०) से जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में कुर्आन लिखते थे और जिन को कुर्आन अधिक जबानी याद था, बड़ी सावधानी से कुर्आन शरीफ एक जगह जमा करा लिया। यही कुर्आन हम आज पढ़ते हैं। आप बड़े नर्म दिल थे। स्वभाव में तनिक कठोरता न थी। खिलाफत के पहले व्यापार द्वारा रोजी पैदा करते थे। खिलाफ़त के बाद कुछ दिनों तक यह कारोबार जारी रहा लेकिन ख़िलाफ़त के कामों की वजह से फुर्सत न मिलती थी, इसलिए सहाबा (रजि०) ने छः हजार दिरहम वज़ीफ़ा मुकर्रर कर दिया। ●●●

नींद नव्वे मिनट के दो चरणों में आती है

हबीबुल्लाह आज़मी

कोई व्यक्ति अगर नींद में खर्राटे ले रहा है तो समझा जाता है कि वह चैन की नींद ले रहा है। परन्तु यह सही नहीं है। पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट के डा० साराभाई के अनुसार यह एक गम्भीर बीमारी का लक्षण है। ऐसे व्यक्ति का पूरे दिन किसी काम में मन नहीं लगता, उसका मुटापा बढ़ता है। उनका कहना है कि कुछ लोगों की बनावट ऐसी है कि नींद में उस की जबान तालू से चिपक जाती है जिस से सांस का रास्ता रुक जाता है। जिसके कारण सांस लेने की कोशिश में नाक से खर्राटे की आवाज निकलने लगती है। चौबीस प्रतिशत मर्द और नौ प्रतिशत औरतों में यह बीमारी आम है। इन मरीजों को सीने की बीमारी के विशेषज्ञों को दिखाना चाहिए ऐसे मरीजों को सोते समय मास्क लगा दिया जाता है। न्यूरो–ब्योजिस्ट डाक्टरों द्वारा पिछले दो वर्षों में दिमाग की गतिविधियों (अमल) को जानने की कोशिश की गई है। इसके फलस्वरूप शोधकार्यों को पता चला कि नींद के दो खास चरण होते हैं। पहले चरण में आंख की पुतली तेजी से घूमती रहती है जिसे रेपिड आई मूवमेंट कहते हैं। इसे 'रेम' नींद के नाम से जाना जाता है। दूसरे चरण में पुतली का घूमना रूक जाता है जिसे 'रेम रहित' नींद के नाम से जाना जाता है। इंसान के रेम और रेम रहित का एक चक्र पूरा करने में ६० मिनट लगते हैं। जैसे–जैसे सुबह होने लगती है तब इंसान रेम नींद में अधिक समय व्यतीत करता है और उसके रेम रहित नींद का समय कम होता जाता है।

रेम नींद के दौरान दिमाग की इलेक्ट्रोग्राम यंत्र के जरिये खींचे गए नक्शों के द्वारा यह पता चल जाता है कि इस बीच दिमाग बहुत अधिक सक्रिय (सरगर्म) रहता और उसमें तेजी से अमल होते रहते हैं। यदि रेम नींद के दौरान किसी को जगा दें और उससे यह पूछें कि वह ऐसा क्या सोच रहा था कि उसका दिमाग इतना सक्रिय था तो सभी लोग यह जवाब देंगे कि वह सपने देख रहा था। जबकि रेम रहित नींद के दौरान सपने नहीं दिखाई देते। अर्थात सपने केवल रेम नींद में ही दिखाई देते हैं।

मनोविज्ञान के विशेषज्ञ लगातार यह मालूम करने की कोशिश में हैं कि सपनों के पीछे क्या कोई छुपा उद्देश्य है? लेकिन उन्हें अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिली है। वर्तमान युग के वैज्ञानिक अब तक यही मान रहे हैं कि सपने पिछले दिनों की घटनाओं के टुकड़े हैं जो मस्तिष्क द्वारा नींद के दौरान जानकारियों की रिसाइक्लिंग की वजह से याद रह जाते हैं। कभी कभी सपने सच भी हो जाते हैं परन्तु वैज्ञानिक सपनों और भविष्य में पेश आने वाली घटनाओं के बीच कोई तालमेल नहीं बैठा सके हैं।

अमरीका का भ्रम

शायद अमरीका समझता है कि वह इस्लाम को मिटा देगा यह उस का भ्रम है। कियामत आने से पहले तक इस्लाम इस दुन्या में रहेगा। इस दुन्या से इस्लाम उठते ही क़ियामत आ जाएगी।

दुन्या की कोई ताक़त इस्लाम का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती, हां ज़ालिम ताक़तें मुसलमानों को सता सकती हैं जिसके बदले में सताए जाने वाले आख़िरत में जन्नत पाएंगे और सताने वाले ज़ालिम जहन्नम की आग में भुनेंगे।

मुसलमानों को हुक्म है कि उनके इख़्तियार में हो तो ज़ालिम की कलाई पकड़ कर उसे ज़ुल्म से रोक दें और अगर यह उनके बस में न हो तो सब्र करें। काम्याब तो वही है जो जहन्नम से बचा दिया गया और जन्नत में दाख़िला पा गया ।

(पृष्ठ ४ का शेष)

किया कि मैं खुद से नहीं पढ़ाऊंगा जिसको जो पूछना हो तो पूछ सकता है तो इस होनहार बच्चे ने पूछ पूछ कर इतना सीख लिया। लेकिन ज़ाहिर है हर बच्चा तो इस तरह का नहीं हो सकता । मैं तो हैरान हूं इनही बच्चों से कल देश चलवाना है और उनके साथ हमारा यह बरताव। न इंग्लिश मीडियम से इतमीनान न सरकारी प्राइमरी से सन्तुष्टि । आज इन बच्चों के साथ हमारे टीचर्स इन को धोखा दे रहे हैं कल यही कालेज और यूनीवर्सिटी के इम्तिहानात में इन्तिज़ामिया को नाकों चने चबवाएंगे इस सब के बावजूद यह जब बूढ़े होंगे तो छोटों से बखान करेंगे कि अब पढ़ाई क्या ख़ाक होती है पढ़ाई हमारे ज़माने में होती थी। काश कि प्राइमरी तालीम की ख़ामियों की तरफ़ बा इख़्तियार माहिरीन ध्यान देते।

आह मुहीयुस्सुन्नः

हज़रत मौलाना शाह अबरारुल हक़ साहब

उलमाए दीन को अल्लाह तआला ने अपने दीन की कूवत व सुरक्षा का जरिया बनाया है और उनसे इस अहम काम को पूरा कराने के लिए जिनको अधिकार देता है, तो उनके द्वारा एक तरफ तो दीने हक़ की हिफाजत और उसको कूवत मिलती है, दूसरी तरफ उनके पालन हार की तरफ से ऐसे पवित्र और उसके पसन्दीदा काम के लिए चुने जाने से उनकी बरकत और उनसे इंसानी दिलों पर शान्ति व रहमत नाजिल होने (उतरने) की सबील (उपाय) पैदा हो जाती है और गैर महसूस तरीके से उनकी लोक प्रियता आम होती चली जाती है और वह सबके लिये आकर्षण केन्द्र बन जाते हैं और उनसे लाभ उठाने के लिए और दिलों के लिए शान्ति हासिल करने के लिए जनमानस के समूह के समूह उन की तरफ झुकते हैं। ऐसी मुबारक शख़्सियतों में से जो कोई शख्सियत अल्लाह की तरफ से अपनी निश्चित अवध पूरी करके संसार से प्रस्थान करती है, तो रंजोग़म का एक माहौल बन जाता है। यह माहौल दुन्यावी तौर पर रोने पीटने का माहोल नहीं होता बल्कि दिलों को मुरझा जाने और बेचैन व दुखी हो जाने का माहौल होता है जिसमें आख़िरत (अन्तकाल) की सफलता की फिक्र करने वाले और आख़िरत में अपनी कामयाबी और सुर्खरूई चाहने वाले लोगों के लिए दिली तस्कीन और शिफ़ा–ए–क़ल्ब (स्वस्थ हृदय) को सख्त सद्मा पेश आ जाने की घटना महसूस की जाती है। पिछले समय में बहुत सी ऐसी महान शख्सियतें इस प्रायद्वीप भारत व पाक में इस रंगबिरंगे संसार से विदा हुईं उनमें हर जाने वाले के जाने पर बड़ा दुख व मलाल महसूस किया गया लेकिन यह ख़याल भी होता रहा कि ऐसे बन्दगाने खुदा (खुदा के सेवक) अभी खत्म नहीं हुए है। किसी न किसी हद तक बदल मिल जाने की उम्मीदें हैं और अल्लाह तआला का इस उम्मत (समुदाय) के साथ मुआमला ऐसा ही होता है कि किसी महान व्यक्ति को उठा लेता है तो उसकी तलाफी (छतिपूर्ति) के लिए सामान मुहैया फरमा देता है। लेकिन इधर कुछ दिनों से ऐसा महसूस होने लगा हे कि अल्लाह तआला की तरफ से इस करम (अनुकम्पा) में कमी तो नही घटित हो रही है और खुदा के बन्दों की अपने दयावान मालिक की नाफरमानियों की अधिकता से उसकी तरफ से नाराजगी की शक्ल में तो जाहिर नहीं हो रही है कि अपने नेकबन्दों को जो बेचैन दिलों के सुख चैन का साधन बनते हैं और इंसानी भलाई का काम करते हैं, खुदा के बन्दों की नाफरमानियों (अवज्ञा) के कारण उनकी तादाद कम कर देने का इरादा किया गया हो? यह बड़े चिंता की बात है। अल्लाह तआला से हम सब को प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपनी रहमत और करम (दया व अनुकम्पा) को ऐसे नेक बन्दों के जरिये हज़रत मौलाना राबेहसनी नदवी जो वह फरमाता रहता है कम न करें।

हजरत मौलाना शाह अबरारूल हक जिन को मोहीयुस्सुनः की उपाधि से याद किया जाता है, हकीमुल उम्मत हजरत मौलाना अशरफ अली थानवी रहमतुल्लाह अलैहि, जिन्होंने बीती हुई सदी में तजदीद व अहयाए सुन्नत (सुन्नत के ज़िन्दा करने) का बड़ा काम किया था और इस काम में अपने खुलफा की एक खास तादाद छोड़ कर बिदा हुए थे, उनमें सबसे कम उम्री में होने वाले खलीफा मौलाना अबरारूल हक (रह०) थे। उन को अल्लाह तआला ने उनके बाद अधिक समय (६२–६३ वर्ष) तक दीन की सेवा व शरीअत के काम के लिए बाकी रखा। उनसे भारत प्रायद्वीप हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के तालिबान (इच्छुक लोगों) को इस्लाह (सुधार) का अधिक से अधिक लाभ उठाने का अवसर मिलता रहा वह भी ६ रबीउस्सानी १४२६ हि० की रात को लगभग ६० साल की उम्र में अपने अनगिनत मोतकिदीन (श्रद्धालुओं) और मुरीदीन को दुःखित छोड़ कर अपने पैदा करने वाले मालिक से जा मिले। ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।''

वह वर्षों से बीमार थे लेकिन दीन की सेवा और लोगों के सुधार व तजकिया (शुद्धि) का काम उसी लगन व तवज्जुह से अंजाम दे रहे थे। और इसका उन्होंने प्रारम्भ से प्रबन्ध रखा और बावजूद माजूरियों (लाचारियों) के

वह सफर भी करते रहते थे। लोगों को सुन्नत की पैरवी और दीन के सही आदेशों पर अमल करने की सीख देते थे और अपना सारा समय इसी में लगाते थे। लोगों से मुलाकातों में, अपनी मजलिसों में बराबर इन दीनी कमजोरियों की तरफ ध्यान दिलाते जो मुसलमानों में बल्कि दीनदारों में भी बेखियाली के कारण फैल गई हैं। सुधार के कामों में अपनी खास तवज्जुह में दूसरों से कहीं अधिक चिन्ता और व्यवस्था करने वाले थे। इस प्रकार बहुत से लोगों की कमज़ोरियों का सुधार हुआ। उनके साथ उठने बैठने और रहने से बहुत लोगों को दीनी इस्लाह और शरअी आदेशों पर पूरी तरह अमल करने के काम को प्रोत्साहन मिला उनके इस काम को उनके खुलफा और उनके मुरीदों ने इख्तियार किया जिसके जरिये उनका फैज बहम्दिल्लिाहि जारी है। उन्होंने इस्लाही (सुधार) काम के उद्देश्य की पूर्ति के लिए जगह जगह मकतब कायम किये और इनको चलाने के लिए संस्थाएं कायम कीं जो मजलिसे दावतुल हक के नाम से काम कर रही हैं और अपने वतन हरदोई में एक बड़ा मदरसा "अशरफुल मदारिस" के नाम से कायम किया जो तालीमे दीन के विभिन्न विभागों से सम्बद्ध है और कुर्आन मजीद की तिलावत को सही कराने के काम और व्यवस्था में वह खास शुहरत भी रखते हैं। अल्लाह तआला हजरत वाला को उम्मते इस्लामिया की तरफ से बहुत बहुत जजा (अच्छा बदला) प्रदान करे और उनकी मेहनतों का महान बदला दे और आला अलीयीन में जगह दे और उनके खुलफा को उनकी बरकत से पूरी तरह लाभ प्रदान करे और लोगों को उनके खुलफा से खास तौर पर उनके जानशीन (उत्तराधिकारी) जनाब हकीम क़लीमुल्लाह साहब को, जो उनके दामाद भी हैं, उनके बुजुर्ग (मौलाना अबरारूल हक साहब) के तरीके पर फ़ैज़ (दानशीलता) अताफरमाएं।

इधर चन्द वर्षों से हजरत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी (रह०) और हज़रत मौलाना के बीच करीबी सम्बन्ध कायम हो गया था। हजरत मौलाना नदवतुल उलमा तशरीफ लाते औरबड़े उदारचित के साथ तलबा और उस्तादों को सम्बोधित करते। तुलबा और उस्तादों को भी मौलाना से फैज़ (लाभ) उठाने का मौका मिलता। इस तरह हज़रत मौलाना के स्वर्गवास पर उस्तादों और विद्यार्थियों की भारी संख्या हरदोई का सफर करके जनाजे में शरीक हुई और नदवतुल उलमा के ज़िम्मेदारों और उस्तादों ने ख़िताब किया (अभिभाषण दिया) और हज़रत वाला की जिन्दगी के विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाली कि किस प्रकार उन्होंने अपनी जिन्दगी के एक–एक क्षण को कीमती बनाया और बन्दों को अपने खालिक (पैदा करने वाले) व मालिक से रिश्ता मजबूत करने और बन्दों के साथ सही सम्बन्ध कायम किये जाने के लिए वाज व नसीहत और सुधार व तर्बियत (दीक्षा) के द्वारा अपनी दीनी जिम्मेदारी अंजाम दी और एक बामक्सद (उद्देश्यपूर्ण) और मुफीद जिन्दगी गुजार कर रुखसत हुए।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी

अल्लाहु अकबर

ईमान ज़िन्दाबाद

काविश रूदौलवी

क़ुर्आं किताबे रब्ब है ईमान ज़िन्दाबाद
यारब यूंही रहे हमारी शान ज़िन्दाबाद
जो हो गये हैं दीन पे क़ुर्बान ज़िन्दाबाद
तुम को भी ख़ौफ़ होगा सुनो अपनी फ़ौत का
आओ कि ख़ौफ़ हम को नहीं अपनी मौत का
है कर्बला का आज भी मैदान ज़िन्दाबाद
ज़ालिम हज़ार ज़ुल्म करे तो भी क्या हुआ
होगा वही जो तेरी मशीयत हे या ख़ुदा
बस ता अबद रहेंगे मुसलमान ज़िन्दाबाद
बातिल परस्त ताक़तो अब बाज़ आओ तुम
हम को मिटाने वालो कहीं मिट न जाओ तुम
शैतान मुरदाबाद हैं इनसान ज़िन्दाबाद
इस पार अपनी ईद है उस पार अपनी ईद
बेशक बनेंगे ग़ाज़ी या फिर होंगे हम शहीद
अब तक यही हैं दिल में ये अरमान ज़िन्दाबाद
तारीख़े कर्बला अभी तुम ने पढ़ी कहां
झन्कार मेरी तेग़ की तुम ने सुनी कहां
हक़ पर गई है जान तो है जान ज़िन्दाबाद
शद्दाद हो नम्रूद हो हामान कि फ़िरऔन
इस्लाम को मिटा सके ऐसा हुआ है कौन?
जब तक रहेंगे हाफ़िज़े क़ुर्आन ज़िन्दाबाद
सीनों पे तीर खाए जो वह शहसवार हम
बच्चों पे औरतों पे नहीं करते वार हम
तारीख़ में यह अपनी रही शान ज़िन्दाबाद
काविश खुदा का ख़ौफ़ हो वहदत पे हो अमल
और शाहे दो जहां की शरीअत पे हो अमल
बस आख़िरत का अपना ये सामान ज़िन्दाबाद

रसूल की सच्ची पैरवी

आप जिस बस्ती में रहते हैं उसमें कोई मुसलमान शराब खुवार तो नहीं रहता। अगर रहता है तो अब तक आपने उससे शराब छुड़ाने की क्या कोशिश की है? आपके वतन की इस्लामी आबादी में कोई शख्स सूद के अज़ाब में गिरफ्तार तो नहीं नजर आता? अगर है तो आपने अब तक उसको इस अजाब से नजात दिलाने में कोई कोशिश और उपाय किया? आपके शहर में कुछ बदनसीब हस्तियां ऐसी तो नहीं, जो अल्लाह का नाम लेने और मुहम्मद सल्ल० का कलिमा पढ़ने के साथ ही, अपनी शर्म व हया, इस्मत व इफ्फत (सतीत्व व संयम) की तिजारत में लगे हुए हैं? अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता हैं तो आपने अब तक उन बदनसीबों की हालत सुधारने में क्या क्या काम अंजाम दिये हैं? इसी तरह जिन जिन चीज़ों पर आपका ज़मीर (अन्तरात्मा) आपकी अक़्ल, आपका क़ल्ब (हृदय) जुर्म व खता, गुनाह व मासियत (पाप) होने का फतवा देता है, उनकी रोक थाम के लिए आपने अब तक अपनी बस्ती में अपने महल्ले में अपने पड़ोस में कितनी कोशिशें, इनसानियत हमदर्दी के जज़बात (भावनाओं) के साथ की हैं?

यह जितने गुनाहगार मर्द और औरतें नज़र आ रहे हैं आप ही के भाई बहन हैं, उन पर हिक़ारत (घृणा) से नज़र न कीजिए, मुम्किन है कल यह ज़ियादा मुअज़्ज़ज़ (सम्मानित) साबित हों, उनको रूस्वा (निन्दित) बदनाम करने के बजाए उनसे नेकी हमदर्दी का बरताव कीजिए मुमकिन है आपको भी किसी दूसरे का सहारा ढूंढने की जरूरत पड़ जाए, उनसे नफ़रत करके, उनके साथ तहक़ीर व ज़िल्लत (अपमान और निन्दा) का बर्ताव करके,उनके दिलों में जिद और सख्ती न पैदा कीजिए बल्कि उस शफकत और नर्मी के साथ जिसको आप अपनी औलाद के साथ और अपने खास दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ बरतते रहते हैं, रफता रफता उन्हें सीधे रास्ते पर लाइये, उनसे मिलने जुलने में अपनी तौहीन (अपमान) न समझए। उनसे मिलये तनहाई में उन्हें समझाइये, ज़रूरत हो तो उनकी खुशमद कीजिए और इस राह में खुद आप की भी जिस कदर तौहीन हो, जिसकदर बदनामी हो उससे बद दिल न होइये।

काम ज़रा मुशकिल है, जलसों में शायद तअ़रीफ (प्रशंसा) न हो अखबारों में कहीं ज़िक्र (चर्चा) न हो और नाम और काम की शुहरत शायद फौरन न हो, लेकिन जिस वक़्त ज़बानें गुंग हो जाएंगी और जिस्म का रोयां रोयां जबाने हाल बन जाएगा, जिस वक्त आफताब (सूरज) बेनूर हो जाएगा और काएनात (संसार) का ज़र्रह ज़र्रह (कण–कण) हकीकत की तजल्ली (रोशनी) से आफताब बन जायेगा। जिस वक्त झूठे इन्सानों की नहीं, सच्चे फरिश्तों की गवाहियां गुजरने लगेंगी, और एक एक के पतरे खुलने लगेंगे उस वक्त नजर आएगा कि पहले अपनी जात के फिर अपने घरवालों, अपनी बिरादरी वालों, अपने महल्ले वालों, अपनी बस्ती वालों के सुधारने की खामोश व बेनुमाइश कोशिश बेमअना (निरर्थक) और लाहासिल (बेमकसद) न थी यही सच्ची पैरवी–ए–रसूल है, यही सच्ची शरीअत है, यही अस्ली मौलाना अब्दुलमाजिद दरयाबादी तरीक़त है, यही सच्ची हकीक़त है, यही अस्ली सफीयत है, इसके अलावा जो कुछ है अलफाज (शब्दों) का खेल है नफसानियतों (स्वार्थ परता) का तमाशा है।

(अनुवाद : मु० गुफरान नदवी)

(पृष्ठ ४० का शेष)

और वह यूरोप का भाग न बने और हमेशा अमेरिका ब्रिटेन संयुक्त सुरक्षा को प्रमुख समझे।

७. चीन कों चेतावनी दी जाए कि वह स्वयं को केवल व्यापार और कारोबारी सरगर्मियों तक सीमित रखे।

८. इस्राईल के हमास आदि हमलों के खिलाफ बयान बाज़ी बन्द की जाए और स्पष्ट किया जाए कि इस्लाम का आतंकवाद अमेरिका और यूरोप के खिलाफ है और इस्राईल के हमले हमारे दुश्मन को खत्म करने के लिए हैं।

९. मुसलमान देशों में अपनी मर्जी के डिक्टेटर अच्छे हैं और उन्हें प्रजातंत्र की तरफ ले जाना अपने पैरों पर कुलहाड़ी मारना है। दोनों के नजदीक आतंकवादी इस्लाम की कोई सीमा नहीं। यह इण्डोनेशिया से इण्डिया तक फैला है। यह हमारी सभ्यता और हमारी सत्ता का दुश्मन है और यदि इसे न रोका गया तो एक दिन हम सब उसके हाथ में खिलौना होंगे। उन्होंने कहा कि आतंकवाद खुद इस्लाम में मौजूद है। जब तक यह धर्म जिन्दा है हम सुरक्षित नहीं है।

फूलों का राजा गुलाब के कुछ खास गुण

डा०स०मु० आरिफीन

आत्मविश्वास जगाये अच्छी नींद लाये

गुलाब की पंखुड़ियां फ्लू और सर्दी–जुकाम जैसे रोगों से जमकर मुकाबला करती है और शरीर के इम्यून सिस्टम को बढ़ाती है यदि कभी भी आप इन रोगों में से किसी की चपेट में आ जायें। तो गुलाब की चाय को जरूर आजमाएं। गुलाब की चाय इन बीमारियों में काफी फायदेमन्द है। गुलाब की पंखुड़ियों को दस मिनट तक पानी में उबालकर चाय की तरह छानकर पियें। यदि इसको काढ़े को माउथ वाश की तरह इस्तेमाल किया जाये, तो कई तरह की बीमारियों के अलावा मुंह के छाले माउथ अल्सर, सूजन, मसूढ़ों की सूजन या उनसे हो रहे रक्तस्राव (ब्लीडिंग) आदि समस्याओं में फायदा हो सकता है।

महिलाओं के लिए महालाभकारी

गुलाब के शुद्ध तेल की कुछ बूंद अपने मसाज आइल में डालकर पूरे बदन पर मालिकश करने या यही बूंदे गुनगुने पानी में मिलाकर स्नान करने से मासिक धर्म की अनियमितता, मन का एकाग्र न होना व बदन दर्द जैसी समस्याओं में काफी राहत मिलती है। गुलाब की चाय का सेवन करने से शरीर में गैरजरूरी जल एकत्र नहीं हो पाता और पेशाब के जरिये बाहर निकल जाता है।

थकान मिटाये : चुस्ती फर्ती लाये

गुलाब के तेल की कुछ बूंदें पानी में डालकर नहाने, रूमाल में लगाकर सूंघने या बर्नर पर रखकर ध्रूप बत्ती की तरह जलाने से मूड अच्छा हो जाता है। तनाव और थकान से छुटकारा मिलता है। गुलाब के असली तेल की कुछ बूंदों को तेल में मिलाकर दोनों कनपटियों पर मालिश करने से सिरदर्द और माइग्रेन से राहत मिलती है।

इन्फेक्शन से बचायें :

रोज सिरप में विटामिन ए, बी, सी और के भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं। बच्चों के इनफेक्शन से बचाने में इसका सिरप यानी 'रोज सिरप' लाभकारी है। दस्त, अपच, किडनी की समस्याओं और मिचली जैसी बीमारियों के अलावा यह सिरप प्रौढ़ लोगों के लिए भी काफी फायदेमन्द साबित होता है।

रक्तशोधक का भी काम करता है

गुलाब की चाय मूत्रवर्धक होती है। इसके पीने से शरीर में मौजूद हानिकारक तत्व पेशाब के जरिये बाहर निकल जाते हैं। यदि किसी का पेट गड़बड़ रहता है या वह पाचन सम्बन्धी बीमारी इरीटेबल बावेल सिन्ड्रोम का रोगी है । यदि किसी के लीवर में सिकुड़न आ गयी है यदि किसी स्त्री को गर्भाशय में सिस्ट है तो गुलाब व गुड़हल के फूलों की पंखुड़ियों की चाय का सेवन फायदेमन्द होता है?

त्वचा में गुलाबी रंगत लाये

गुलाब जल से त्वचा में निखार आता है। इसके इस्तेमाल से त्वचा के दाग–धब्बे और मुंहासे दूर होते हैं। और त्वचा के नीचे नजर आती पतली–पतली नसों का दिखाना बन्द हो जाता है। यह रूखी त्वचा के लिए भी काफी फायदेमन्द है क्योंकि इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है इसके इस्तेमाल से उम्र के साथ–साथ त्वचा पर आने वाली हलकी झुर्रियों को कम किया जा सकता है। आंखों के आस–पास गुलाब जल लगाने से आंखों की ठंडक मिलती है, गुलाब जल को पानी में मिलाकर स्नान करने से त्वचा में गुलाबी रंगत आती है।

अच्छी नींद लाये :

गुलाब के अरक की कुछ बूंदे जीभ पर डालने से या गुलाब के असली तेल की कुछ बूंदें सोते समय तकिये पर डाल लेने से मन शांत होता है और अच्छी नींद आती है।

आत्मविश्वास जगायें :

बंच फ्लावर रेमेडी के प्रभाव को भी आजमायें। इस चिकित्सा पद्धति की दवा वाइल्ड रोज के इस्तेमाल से प्रेरणा और महत्वाकांक्षा का परखने की सूझ–बूझ जागृत होती है। यह उन लोगों के लिये बेहद कारगर साबित हो सकती है। जो लोग किसी भी चीज को उतसाह पूर्वक स्वीकार कर लेते हैं, चाहे वह निगेटिव थिंग ही क्यों न हो और उससे उनको चाहे जितना नुकसान ही क्यों न होता हो।

प्रनश १. मुझे दूर की चीज धुंधली दिखाई पड़ती है। नजर कमजोर होने की वजह से चश्मा पहनता हूं। मुझे →

कोल सभ्यता

ऐतिहासिक पुस्तकों से

नोट : हमारे कुछ पाठकों ने मांग की कि इस्लामी इतिहास के साथ पूर्व भारतीय इतिहास का परिचय भी दिया जाए अतः यह क्रम आरम्भ किया जाता है।

कोल कौन थे ? – कोल भारत की एक अत्यन्त पुरानी जाति हैं। कुछ विद्वानों की धारणा है कि वह लोग भारत के मूल निवासी थे ाऔर कहीं बाहर से नहीं आये थे। परन्तु कुछ विद्वानों के विचार में यह लोग बाहर से उत्तर–पूर्व के पर्वती मार्गों द्वारा भारत में आये थे। कोल लोग चाहे भारत के निवासी रहे हों और चाहे वह लोग बाहर से आये हों, परन्तु इस बात को सभी स्वीकार करते हैं कि सबसे पहले वही लोग भारत में निवास करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि जब उत्तर पश्चिम की ओर से द्राविड़ लोग भारत में आये तब उन लोगों ने कोलों को उपजाऊ मैदानों में खदेड़ दिया और वे लोग पर्वतीय प्रदेशों तथा जंगलों में भाग गये। यही कारण है कि आज कल भी कोल लोग ऐसे स्थानों में पाये जाते हैं। कोल के वंशज आजकल आसाम, बंगाल, मद्रास, मध्य–प्रदेश तथा नागपुर (बिहार) के पर्वतीय तथा जंगल प्रदेश में पाये जाते हैं। कोलों की कई शाखाएं हैं। इनमें से कुछ तो निरे असभ्य हैं परन्तु कुछ सभ्यता की दौड़ में आगे बढ़ गये हैं। कोल लोग कद में छोटे होते परन्तु नाक चपटी होती है।

कोल सभ्यता : कोल लोगों की गणना भारत की सभ्यता जातियों में होती है। यह लोग मुण्डा भाषा बोलते हैं और गांवों में निवास करते हैं। यह बड़े ही सच्चे स्वभाव के तथा शान्ति–प्रिय होते हैं। अपरिचित लोगों से बहुत डरते हैं और उनसे दूर रहने का प्रयास करते हैं। परन्तु परिचितों के साथ वह लोग प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। अब कोलों के जीवन का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

(१) जीविका के साधन : चूंकि कोल भारत के आदि–निवासी थे अतएव प्रारम्भ में यह लोग जानवरों का शिकार कर तथा कन्द मूल और फल खाकर अपनी जीविका चलाते थे। परन्तु कालान्तर में यह लोग कृषि भी करने लगे और पशुओं को पालने लगे। यह लोग धान तथा गन्ने की खेती किया करते थे और हाथियों तथा भैसों को पालते थे।

(२) सहयोग का जीवन : कोल लोग संगठन बनाकर गांवों में निवास करते थे। शिकार के लिए एक साथ जाया करते थे और भोजन भी यह लोग एक साथ ही किया करते थे। यह लोग बड़े मेल–जोल के साथ रहते थे और एक दूसरे की सहायता करने के लिए सदैव तैयार रहते थे।

(३) सामाजिक जीवन – कोल लोगों में जाति–प्रथा न थी और न उनमें कोई वर्ग–भेद था। समाज में ऊंच–नीच का कोई भेद भाव न था और सभी समान समझे जाते थे। कोल लोगों को अपने बच्चों की शिक्षा का बड़ा ध्यान रहता था। वह शिक्षा व्यवहारिक होती थी और गण के एक पदाधिकारी द्वारा दी जाती थी।

(४) दण्ड विधान – कोलों के अपने अलग नियम होते थे और इन्हीं नियमों के अनुसार अपराधियों को दण्ड दिया जाता था। जो लोग बड़े–बड़े अपराध करते थे वे गांव के बाहर निकाल दिये जाते थे।

कोई दवा बतायें जिससे चश्मा न पहनना पड़े। एम०एम० रिजवी, दिल्ली

उत्तर : आज चैलेवजपहउं ३० की एक–एक खुराक दिन में चार–चार बार एक महीने तक लें। अपने खाने में विटामिन – ए युक्त खा पदार्थों का समावेश करें।

प्रश्न २. मेरे पेट में दायीं ओर भारीपन महसूस होता है और गैस भी ऊपर की तरफ चढ़ती है?

उत्तर : आप स्लबवचवकपनउ २०० की एक टरकशक दस–दस मिनट पर तीन बार हफते में एक बार और ब्तइव टमह ३० की एक–एक खुराक दिन में चार बार ले, एक महीने के बाद बतायें।

प्रश्न : डा० साहब पिछले एक साल से मेरी बच्ची के पूरे बदन में खुजली है, ज्यादा हाथ और पैरों पर है खुजलाने पर पस निकलता जो कि बहुत चिप चिपाता है। (नजमा, लखनऊ)

उत्तर : आप ..... की तीन खुराक दस–दस मिनट पर १५ दिन में एक बार और ..... एक–एक खुराक दिन में चार बार लें, तली, खट्टी और मसाले से परहेज कर, हरी सबजी और पानी अधिक मात्रा में लें, नीम या मारेगा साबुन से नहायें।

नअ़त व मन्क़बत

हैदर अ़ली नदवी

ज़िन्दगी आमाल से ख़ाली जो लेकर जाएंगे
बाद मरने के बहुत वह हश्र में पछताएंगे
जो दुरूदे पाक कसरत से पढ़ेंगे आप (स०) पर
रहमतुललिल आ़लमीं उनपर करम फ़रमाएंगे
क़ल्ब में महफ़ूज है जिनके कलामे किब्रिया
बा ख़ुदा दस दोज़ख़ी लोगों को वह बख़्शाएंगे
शाद होंगे अहले ईमां दोस्तो उस दिन बहुत
नामए आमाल उनका जब फ़िरिश्ते लाएंगे
क़ब्र की तन्हाई में सुनलो मेरे ऐ दोस्तो
नेक जो आमाल होंगे बस वही काम आएंगे
जो नमाज़ें छोड़ते हैं जानकर बद बख़्त हैं
जिस्म उनके सांप बिच्छू अजहदे सब खाएंगे
पेशतर चौदह सदी आक़ा मेरे फ़रमा गए
दुश्मनाने दीं तुम्हें आपस में ही लड़वाएंगे
मुत्तहिद हो मोमिनो ये कह रहा क़ुरआन है
गीत बर्बादी के तेरी लोग वरना गाएंगे
छोड़ कर आमाले उ़क़बा लग गए दुन्या में जो
कल यही इन्सान सारे ना समझ कहलाएंगे
हुक्मे रब पर जो चलेंगे रोज़ो शब यारो यहां
रोज़े महशर की तपिश से वह नहीं घबरायेंगे
कह गए आक़ा जमाअ़त पर ख़ुदा का हाथ है
तफ़्रिक़ा पर्दाज़ दोज़ख़ में ठिकाना पाएंगे
ग़ार में ठहरे हैं आक़ा साथ में सिद्दीक़ के
वह क़ियामत तक रफ़ीक़े ग़ार अब कहलाएंगे
जज़्बए फ़ारूक़े आज़म हो अ़ता मेरे ख़ुदा
अ़द्ले फ़ारूक़ी का परचम फिर से हम लहराएंगे
बिअरे रूमा वक़्फ़ करके कह दिया उसमान ने
प्यास से ज़ालिम यहूदी अब न तड़पा पाएंगे
सौंप कर परचम अ़ली को ये कहा असहाब से
मुर्तज़ा अब फ़ातिहे ख़ैबर पुकारे जाएंगे
हज़रते फ़ारूक़ हैं दामादे हैदर देखिए
इस हक़ीक़त को अ़दू हरगिज़ न झुठला पाएंगे
हक़ पसन्दों को कभी भी तुम झुका सकते नहीं
वक़्त के फ़िरऔनियो तुम से नहीं घबराएंगे
रहबरी हैदर मिली है आप के असहाब की
अहले दुन्या अब हमें क्या रास्ता दिखलाएंगे

रहीम के दोहे

अमर बेलि बिन मूल की, प्रतिपालत हैं ताहि ।
'रहिमन' ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिये काहि।।
'रहिमन' वे नर मर चुके, जे कहुँ मांगन जाहिं।
उन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।
'रहिमन' विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत् में, जानि परत सब कोय।।
'रहिमन' रिस को छाँड़िके, करो गरीबा भेस।
मीठौ बोलौ नै चलौ, सबै तुम्हारो देस।।
यौं 'रहीम' यश होत है, उपकारी के संग।
बांटन वारे को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग।।
खीरा सिर ते काटिए, मलिये नमक लगाय।
'रहिमन' करूवे मुखन को, चहियत यही सजाय।।
जो 'रहीम' ओछो बढ़े, तो अति ही इतराय।
प्यादा से फर्जी भयो, टेढ़ो–टेढ़ो जाय।।
समय दशा कुल देखके, सबै करत सम्मान।
'रहिमन' दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।।
'रहिमन' नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझै सब ताहि।।
बिगड़ी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय।
'रहिमन' बिगड़े दूध को, मथे न माखन होय।।
'रहिमन' देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहां करे तरवार।।
रीति प्रीति सब सौं भली, वैर न हित मित गोत।
'रहिमन' याही जन्म की, बहुरि न संगत होत।।
यह 'रहीम' निज संग लै, जनमत जगत् न कोय।
बैर, प्रीति, अभ्यास, यश, होत–होत ही होय।।
तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पानि।
कहि 'रहीम' पर काज हित, सम्पत्ति सचहिं सुजानि।।
'रहिमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

हबीबुल्लाह आज़मी

ब्रिटेन में पहला इस्लामी बैंक

अरबी समाचार पत्र "अलशर्कुल वस्त" के अनुसार ब्रिटेन में पहला इस्लामी बैंक कायम हो गया है जोकि **"Islami Bank of Britain"** के नाम से जाना जाएगा। बीस लाख ब्रिटिश मुसलमानों के अतिरिक्त, यात्रियों और विभिन्न धर्मों के मानने वालों के लिए अपनी सेवाएं प्रस्तुत करेगा। बैंक का पूरा लेन देन गैर सूदी होगा और शरीअत इस्लामी के अनुसार होगा। बैंक ने निश्चय किया है कि वह ऐसी कम्पनियों में पूंजी निवेश से बचेगा जो सूदी लेन देन पर निर्भर हैं या तम्बाकू और दूसरी नशीली वस्तुओं को पैदा करती हैं। इस्लामी बैंक आफ ब्रिटेन ब्रिटेन की राजधानी में अपनी पहली ब्रांच खोल चुका है और उसने ऐलान किया है कि वह तमाम यूरोप के मुसलमानों को अपनी सेवा उपलब्ध कराएगा। बैंक के निदेशक जनरल माईकेल ने कहा कि बैंक को पूरी तरह इस्लामी शरीअत के अनुसार चलाया जाएगा। बैंक के जिम्मेदारों के अनुसार ब्रिटिश मुसलमानों के साथ खाड़ी देशों के मालदार शयूख़ भी बैंक आफ ब्रिटेन की सेवाओं से लाभ उठाएंगे, जिस का हेड आफिस मुस्लिम आबादी वाले शहर बरमिंघम में कायम है और लन्दन में अपनी ब्रांच खोलने का एलान कर चुका है।

चूंकि इस्लाम सूदी कर्ज देने को हराम करार देता है। इसलिए यह बैंक अपने ग्राहकों की पसन्द और जरूरत के अनुसार सामान खरीद कर उनको निश्चित मूल्य पर बेचेगा और माहाना किस्तों पर ग्राहकों से उनकी कीमत वसूल करेगा। टाइम्स पत्रिका ने मिस्टर हानलून से बात चीत इस पर समाप्त की है कि बैंक सौ फीसदी इस्लामी शरअी उसूलों पर चलाया जाएगा और इसको खाड़ी देशों के पूंजी निवेशकों और ब्रिटिश मुस्लिम समाज का सहयोग प्राप्त रहेगा।

अमेरिका में एक खतरनाक पुस्तक का प्रकाशन :

हाल ही में अमेरिका में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक दो अहम व्यक्तियों ने लिखी हैं और पुस्तक का नाम **"An End to Evil , How To Winn War"** है। इस पुस्तक का एक लेखक रिचर्ड पर्ल है जबकि दूसरे लेखक का नाम डेविड फ्रूम है। रिचर्ड पर्ल सुरक्षा पालिसी बोर्ड का चेयरमैन रह चुका है और डेविड फ्रूम अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश के भाषण लिखता है।

कहा जाता है कि रिचर्ड पर्ल और डेविड फ्रूम की राय के बिना राष्ट्रपति बुश एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते। इन दोनों ने इस पुस्तक में जो विचार पेश किया है वह तमाम दुन्या के न्याय प्रेमियों और मुख्यकर मुस्लिम देशों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इन दोनों लेखकों ने एक ऐसे देश का चित्र पेश किया है जो ताक़त के नशे में चूर है जो अपने लाभ के लिए संसार के तमाम देशों को अपनी मर्जी के अनुसार चलाना चाहता है।

इस पुस्तक के महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नवत हैं –

१. अमेरिका को अपनी पूरी कोशिश करके सऊदी अरब के तेल से माला माल पूर्वी क्षेत्र को अलग कर देना चाहिए ताकि सऊदी सरकार निर्धन हो जाए और वहां केवल मुसलमानों के पवित्र स्थानों के सिवा कुछ न हो।

२. ईराक से आतंकवादियों के खिलाफ पीछा शाम की सीमाओं के अन्दर तक किया जाए और यह उस समय तक किया जाए जब तक शाम संतुलित इस्लाम और पश्चिमी राजनीतिक व्यवस्था के सामने झुक न जाए।

३. उत्तरी कोरिया पर तुरंत हमला करके उस के सभी ऐटमी केन्द्र ऐटमी भण्डार काबू में कर लिया जाएं।

उसके मीजाइलों के अड्डे बन्द किर दिये जाएं।

४. इरान सरकार का तख्ता उलटने के लिए उस देश से निकाले व्यक्तियों की सहायता की जाए। जब तक मौजूदा हुकूमत इरान में मौजूद है कभी भी संसार में शान्ति कायम नहीं हो सकती ।

५. संयुक्त राष्ट्र की सत्ता कभी स्वीकार न की जाए। जब तक कि वह अमेरिका की इस विचार धारा को अपने चार्टर का भाग न बना ले कि (संभावित) हमले से पहले से रोक थाम के लिए किसी देश पर हमला किया जा सकता है।

६. फ्रांस को यूरोप से दूर किया जाए और ब्रिटेन पर दबाव डाला जाए

(शेष पृष्ठ ३६ पर)